चन्दामामा
जनवरी १९६७
75 P

Chandamama Press
VADAPALANI
MADRAS 26
OFFERS YOU...
FINEST PRINTING.-
Equipped with
PHOTO GRAVURE
KLIMSCH CAMERA
VARIO KLISCHOGRAPH-
-BLOCK MAKING
and a
host of Others....

चाँद उगा है, फूल खिला है
कदम गाछ तर कौन ?
नाच रहे हैं हाथी-घोड़े
ब्याह करेगा कौन ?

ताँती के घर बेंग बसा है
ढोंसा को है तोन्द !
खाता-पीता मौज उड़ाता
गाना गाता कौन ?

हँसी के इस फुहारे को छोड़ते ही करोड़ों-करोड़ शिशुओं के खिलखिलाते प्रफुल्लित चेहरे नजर के सामने उभर आते हैं।

प्रगतिशील भारत में शिशुओं के स्वास्थ्य को आकर्षक बनाये रखने के लिये 'डाबर' ने तरह-तरह के प्रयोग एवं परीक्षण के बाद–'डाबर जन्म-घूँटी' का निर्माण किया है।

शिशुओं के सभी प्रकार के रोगों में व्यवहार की जाती है।

डाबर (डा. एस. के. बर्म्मन) प्रा. लि., कलकत्ता-२६

नुसेकोस

प्लास्टिकले

बच्चों के लिये एक खिलौने बनाने का अद्भुत रंग बिरंगा मसाला जो बार-बार काम में लाया जा सकता है। १२ आकर्षक रंगों में सर्वत्र प्राप्त है।

नर्सरी स्कूल व होम इक्विपमैन्ट कम्पनी

पोस्ट बाक्स नं १४१६, दिल्ली-६

by

THE NATIONAL TRADING CO.

Manufacturers of

KASHMIR SNOW BEAUTY AIDS

BOMBAY-2. MADRAS-32.

७.८.१९६६
मेरे अच्छे चाचा,
आज हम मोटर से पिकनिक पर गए
और इतनी दूर चले गए कि बिचारी
मोटर भी थक कर रुक गई।
पास ही एक दुकान थी हम
ने वहां से दौराला की गोलियों
के दो बड़े बड़े डिब्बे खरीदे।
गर्मी बहुत थी पर गोलियाँ
बड़ी ही अच्छी और स्वादु थी।
आप के यहाँ आनेपर हम आपको
पिकनिक का सही हाल बताएँगे पर हां।
आती बार हमारे लिये दौराला
की कुछ और गोलियां और
टफीयाँ जरूर लेते आना।
आपका प्रिय
रामू
डी सी एम उत्पादन
दौराला
गोलियां और टाफियां

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

भूत हैं कि नहीं? इस प्रश्न के कई उत्तर सम्भव है। पर यह सत्य है कि जब तक भय है, तब तक भूत भी हैं।

भूत हों या न हों, कहानियों में तो वे हैं ही।

हम इस अंक में एक कहानी... "बाँवली मेघा" दे रहे हैं, जिसमें एक स्त्री को "भूत" बना दिया जाता है।

वर्ष: १८ जनवरी १९६७ अंक: ५

भारत का इतिहास

बालाजी बाजीराव के नेतृत्व में भी महाराष्ट्र साम्राज्य का कुछ विस्तार हुआ। मार्च १७५७ में श्रीरंगपट्टन में, महाराष्ट्र की सेनायें प्रत्यक्ष हुईं।

कृष्णा नदी के दक्षिण के राज्यों को महाराष्ट्र को कर देने पड़े।

आर्काट के नवाब ने चौथ का पुराना बकाया २ लाख दिया और उसने वादा किया कि बाकी ढाई लाख भी किश्तों में चुका देगा।

मराठाओं ने बिजापूर, मैसूर राज्यों पर भी आक्रमण किया। महाराष्ट्र का मुकाबला मैसूर के सेनापति हैदर ने, बुस्सी नाम के फ्रेन्च ने और हैदराबाद के निजाम ने किया।

किन्तु पेशवा के भाई के लड़के सदाशिवराव ने १७६० में उदगीर के पास निजाम को पराजित किया। बुस्सी के नीचे, निजाम की सेना में काम करनेवाला, तोपों में निपुण, इब्राहीम खान गर्मी महाराष्ट्र की सेना में मिल गया। वह पाश्चात्य युद्धतन्त्र जानता था।

इस युद्ध में पराजित होने के कारण निजाम को पूरा बीजापुर राज्य, औरन्गाबाद का बड़ा हिस्सा, बीदर का कुछ भाग, दौलताबाद का किला महाराष्ट्र को देना पड़ा।

इस प्रकार मुगल साम्राज्य का एक बड़ा हिस्सा मराठाओं को मिला।

महाराष्ट्र ने उत्तर देश में इससे बड़ी विजय प्राप्त की। १७५६ के अन्त में मल्हार राव होल्कर, रघुनाथ राव कुछ सप्ताहों की व्यवधि में उत्तर भेजे गये।

रघुनाथ राव को चार मास राजस्थान में रह जाना पड़ा। इसलिए उसने सखाराय बाजु के नेतृत्व में २०,००० सैनिकों को "दो आब" के प्रान्त में भेजा।

सखाराय ने जाटों को अपनी ओर कर लिया। १७५७ में उसने दिल्ली पर आक्रमण किया। दिल्ली में अब्दाली द्वारा नियुक्त सर्वेसर्वा नाजी बुददोला को कुछ शर्तों पर सन्धि करने के लिए मनाया।

१७५८ के मार्च में सरहिन्द, एप्रिल में लाहौर, मराठाओं के हाथ आये। महाराष्ट्रियों ने अदीन बेग नामक व्यक्ति को पंजाब में अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया।

क्योंकि इस प्रान्त को जीतने के लिए आवश्यक तैयारियाँ नहीं की गयी थीं, इसलिए इस "महान विजय" के लिए रघुनाथ को राजनैतिक और आर्थिक दृष्टि से खासी कीमत देनी पड़ी। अब्दाली से एक और युद्ध भी अपरिहार्य हो गया।

आदीन बेग के मरते ही १३ आक्टोबर १७५८ में पंजाब में अराजकता बढ़ी।
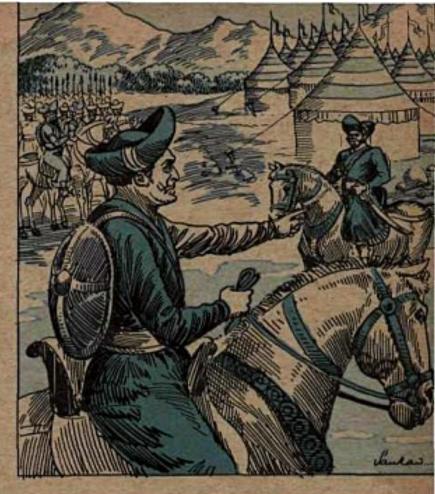
उसका दमन करने के लिए पेशवा ने १७५९ में दत्ताजी सिन्धिया को बड़ी सेना के साथ भेजा।

परन्तु इतने में दुर्रानी सेनाओं ने आकर पंजाब पर आक्रमण किया। १७५९ के नवम्बर में पंजाब को पूरी तरह जीतकर अहमदशा अब्दाली ने दिल्ली पर हमला किया।

इस समय किसी ने भी महाराष्ट्र की सहायता न की, इसलिए उनकी पराजय हुई। रुहेले और अवध का नवाब अब्दाली की तरफ हो गये। राजपूत तटस्थ रहे।

सिक्खों ने भी उनकी मदद न की। इसका कारण बालाजी बाजीराव की नीति ही थी।

उसने अपने पिता की नीति में परिवर्तन किये। उसने "पाश्चात्य युद्ध तन्त्र" का पालन करते हुए अपनी सेना में हर किसी को भरती होने दिया। इससे सेना की एकता जाती रही। अनुशासन भी कम हो गया। उसने "हिन्दू बादशाही" के नारे को भी छोड़ दिया।

इस नारे के कारण, सब हिन्दू राज्य एक हो सकते थे। इसलिए उसके सैनिकों ने, बिना हिन्दू मुस्लिम का भेद किये, सब जगह हमला किया और डाके आदि डालकर, जनता को अपने विरुद्ध भी कर लिया।

इसी कारण जब दुर्रानी की सेनाओं का मुकाबला करने का समय आया, तो किसीने उनकी मदद न की और कई दुर्रानी की तरफ भी हो गये।

१७५९ के अन्तिम दिनों में दत्ताजी सिन्धिया स्थानेश्वर के पास हरा दिया गया। वह दिल्ली की ओर लौटने लगा। रास्ते में दिल्ली के उत्तर में दस मील की दूरी पर बरारी घाट पर, ९ जनवरी १७६० में अफगानों ने उसको मार दिया। दुर्रानी के घुड़सवारों का हमला मल्हार राव होल्कर आदि भी न रोक सकें। सदाशिव राव बापू, जिसने निजाम को हराया था तब पेशवा द्वारा बड़ी सेना के साथ भेजा गया। पेशवा ने अपने सत्रह वर्ष के लड़के विश्वास को नामपात्र का सेनापति बनाकर, उसके साथ उत्तर भेजा।

नेहरू की कथा

[३०]
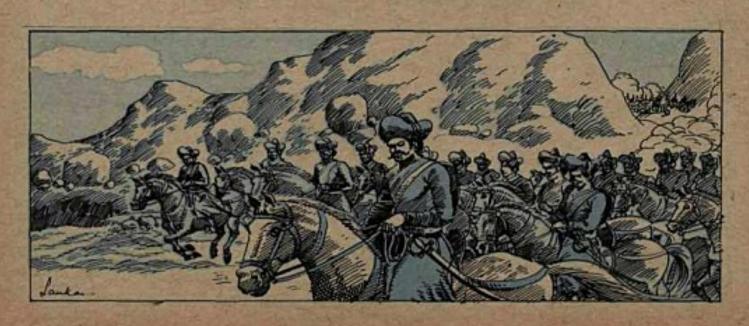
वे बड़े हलचलपूर्ण दिन थे। जहां देखो वहाँ जलूस लाठीचार्ज, गोलीबारी और हड़तालें हो रही थीं। विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार जोरों पर था। पिकटिन्ग चल रही थी। जवाहर को यह सुनकर बड़ा क्षोभ हुआ कि उनकी बूढ़ी माताजी और छोटी बहिन विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर पिकटिन्ग कर रही थीं।

सब से अधिक काम किया उनकी पत्नी कमला ने ही। उन्होंने अपने गिरते स्वास्थ्य की भी परवाह न की।

२३, एप्रिल के दिन इन सबसे अधिक मुख्य घटना पेशावर में गुज़री, जिसने जवाहर को बड़ा प्रभावित किया। सीमा प्रान्त में, ऐसी घटनायें अन्यत्र भी हो रही थीं। अहिंसा का पालन करते हुए, असाधारण साहस दिखाकर, पठानों ने बन्दूकों का सामना किया।

एक और घटना उसी प्रान्त में हुई, गढ़वाली सिपाहियों ने वहाँ की जनता पर गोली छोड़ने से इनकार कर दिया। निहत्थी जनता पर सैनिक के लिए हथियार उठाना बड़ा कठिन काम है और सम्भव है कि सैनिकों में, जनता के प्रति सहानुभूति भी हो। फिर भी सैनिकों के लिए अपने अफसरों की आज्ञा का धिकरण बड़ा अपराध है। इसका दण्ड भी बड़ा जबर्दस्त होता है। इसलिए गुरखा सैनिकों के साहस का महत्व और भी बढ़ जाता है।
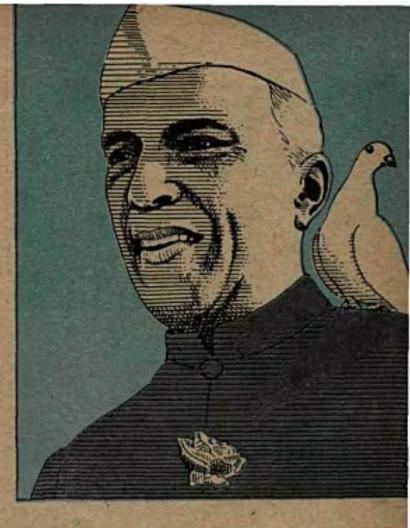
एक और विशेष बात उन दिनों की यह थी कि राष्ट्रीय आन्दोलन में स्त्रियां अधिक भाग ले रही थीं। कई जगह
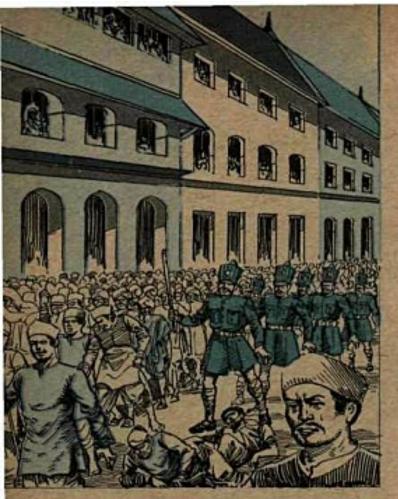
स्त्रियों के जलूस निकले। कई स्त्रियों ने कान्ग्रेस डिक्टेटर के तौर पर भी जोर शोर से काम किया।

जो नमक सत्याग्रह के रूप में प्रारम्भ हुआ, उसके दौरान अन्यत्र भी शासन का उलंघन होने लगा। किस किस बात का उलंघन किया जाये, कान्ग्रेस के नेताओं को बताने की भी जरूरत न हुई।

वायसराय ने इतने ऑर्डिनेन्स जारी कर दिये कि उन सबका विरोध किया गया और सत्याग्रह इस प्रकार बढ़ता गया।

वायसराय की आज्ञाओं का विरोध ही सत्याग्रह था। जिन ऑर्डिनन्सों को उसने सत्याग्रह को रोकने के लिए जारी किया था, उनमें सत्याग्रह को ईन्धन मिलता देख उसकी अक्ल जाती रही और वह और ऑर्डिनेन्स पास करता गया।

जब जब एक एक ऑर्डिनेन्स निकाला जाता, तब तब कान्ग्रेस की कार्यकारिणी समिति सूचित करती कि उसके बारे में क्या किया जाये। सिवाय पत्रिकाओं के और सबने उनकी सलाह को कार्यान्वित भी किया।

५ मई के दिन गान्धीजी गिरफ्तार किये गये। पश्चिमी तट पर नमक की कोठियों पर हमला किया गया। पोलीसवालों ने इस सिलसिले में बड़ी ज़्यादती भी की।

बम्बई में आये दिन हड़तालें होतीं, जलूस निकाले जाते। लाठी चार्ज की जाती। जो लाठी चार्ज में घायल होते उनकी चिकित्सा के लिए जगह जगह हस्पताल खोले गये। जैसा बम्बई में हुआ था वैसा अन्यत्र भी हुआ था

पर चूँकि वह महानगर था इसलिए वहां की घटनाओं को अखबारों में प्रमुखता दी गई।

जून के दूसरे पखवारे में मोतीलाल अपनी पत्नी और पुत्र बधु के साथ बम्बई गये। उनका वहाँ बड़ा शानदार स्वागत हुआ।

वे जब वहाँ थे तब वहां कुछ बड़ी निर्मम घटनायें घटीं। लाठी चार्ज, बम्बई में रोजमर्रे का काम हो गया था, और दो सप्ताह बाद, मालवीयजी और कुछ कार्यकारिणी समिति के सदस्य जब बम्बई की एक सड़क पर जा रहे थे, तो पोलीस ने उनको रोका। दोनों पक्ष, रात-भर वहाँ धरना दिये, जागते रहे।

मोतीलाल जी को, जून ३० को, बम्बई से वापिस आने के बाद गिरफ्तार कर लिया गया। उनके साथ सैय्यद महमूद भी पकड़े गये। वे उस समय कान्ग्रेस के अध्यक्ष थे और मन्त्री भी थे। कान्ग्रेस कार्यकारिणी समिति को गैर कानूनी करार दिये जाने पर ही उनकी गिरफ्तारी हुई थी। दोनों को छः छः महीने की सजा मिली।
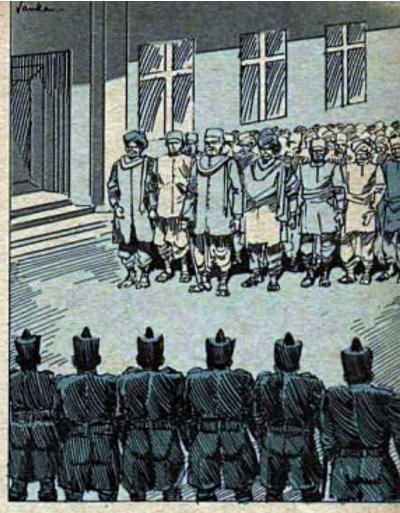
यदि जनता पर गोली मारने का हुक्म दिया जाय तो पोलीस और सिपाहियों को क्या क्या करना चाहिए था, मोतीलाल ने इस विषय में एक घोषणा की थी, उस घोषणा के कारण की शायद वे पकड़े गये थे। परन्तु उस घोषणा में कोई ऐसी बात न थी, जो कानून के खिलाफ थी, तो भी सरकार को वह बड़ी विप्लवकारी घोषणा लगी।

मोतीलाल जब गिरफ्तार हुए थे तब उनकी तन्दुरुस्ती अच्छी न थी। जब वे अध्यक्ष थे, तो उन पर काम का अधिक

दबाव था। डाक्टरों ने उनको आराम करने के लिए कहा था। वे मसूरी जाने के लिए, समान बमान ठीक कर तैय्यार भी हो गये थे। मसूरी जाने के एक दिन पहिले, वे नैनी सेन्ट्रल जेल में जवाहरलाल नेहरू आदि के समक्ष प्रत्यक्ष हुए।

जवाहर सात साल बाद फिर जेल में आये थे। वे तब तक अपना जेल जीवन करीब करीब भूल गये थे। इस बार उनको अकेले कोठरी में रखा गया। यह उन के लिए नया अनुभव था। जहाँ उनको रखा गया था वह करीब सौ फूट व्यास का घेरा था उसके चारों ओर पन्द्रह फीट ऊँची दीवार थी। इसमें चार गन्दी कोठरियाँ थीं। इनमें से दो उनको दी गईं। बाकी दोनों कोठरियाँ खाली थीं।

जवाहरजी को, जो हमेशा जनता में व्यस्त रहते थे, यह एकाकी जीवन दुस्सह-सा हो गया। दो तीन दिन वे खूब सोये। गरमियाँ हो रही थीं, इसलिए उनको बाहर सोने की अनुमति दी गई। कहीं ऐसा न हो कि वे खाट लेकर कहीं चले जायें, या उसे सीढ़ी बनाकर, दीवार फाँद जायें, जवाहरजी कहते हैं, कि उनकी खाट को जँजीरों से बाँध दिया गया था।

जहाँ जवाहरजी को रखा गया था, वह जगह खतरनाक कैदियों के रहने के लिए बनायी गयी थी। जेल में उसे "कुत्ता घर" भी कहा जाता था। फिर वहाँ राजनैतिक कैदी भी रखे जाने लगे। उनका और कैदियों से कोई सम्बन्ध न रहता था।

पाताल दुर्ग

[८]
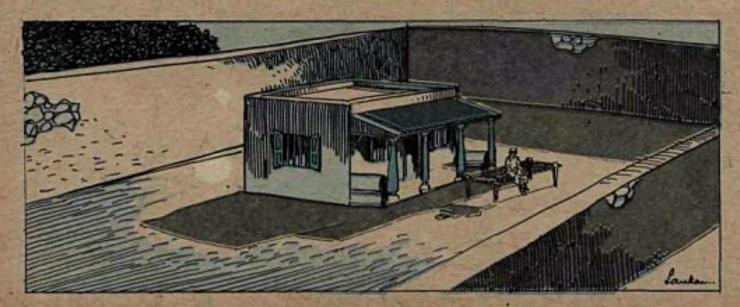
[उग्रसेन के महल और खजाने को विप्लवकारियों ने लूट लिया। फिर वे राजा को ढूँढ़ते ढूँढ़ते जंगल की ओर गये। धूमक और सोमक ने उनको शान्त करके वापिस भेज दिया। धूमक की कमर से जो मन्त्रदण्ड लटक रहा था वह यकायक हवा में उड़ा। सोमक उसे पकड़ने के लिए ऊपर उछला। उसके बाद—]

घोड़े पर से उछल कर सोमक ने झट उड़ते मन्त्रदण्ड को पकड़ लिया। परन्तु इस बीच घोड़ा एक तरफ़ हटा और वह नीचे जा गिरा। परन्तु सोमक ने मन्त्रदण्ड को अपनी मुट्ठी में से न छोड़ा।

धूमक ने घोड़े से कूदकर कहा—"वाह सोमू! चुस्ती हो, तो ऐसी हो। कमर की रस्सी जब टूट गई, तो मैं न सोच सका कि क्या होगा। सचमुच कालशम्बर का मन्त्रदण्ड महिमावाला है।"

सोमक मन्त्रदण्ड पकड़कर उठ खड़ा हुआ। वह उसकी मुट्ठी में से निकलने के लिए साँप की तरह अन्दर बाहर निकल रहा था। वह बल खाने लगा। उसमें से कोई अस्पष्ट ध्वनि निकलने लगी।
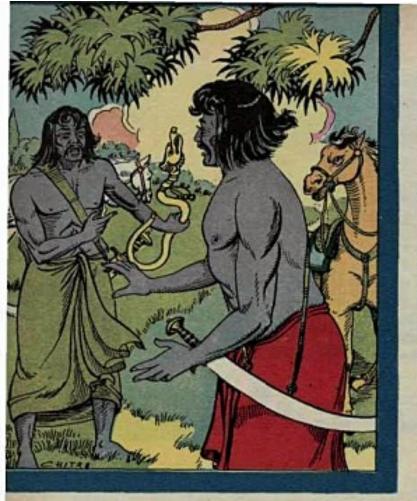
धूमक ने उसको कुछ देर ध्यान से देखने के बाद कहा—"सोमू, मुझे एक बात सूझ रही है। मेरा सन्देह है कि कालशम्बर इसको पाने के लिए कोई मन्त्र पढ़ रहा है। इसलिए यह उसके पास जाने के लिए कोशिश कर रहा है।"

"अगर हम इसके दिखाये रास्ते पर गये, तो हम उस दुष्ट को पकड़ सकते हैं।" सोमक ने धूमक को मन्त्रदण्ड देते हुए कहा।

"यह कैसे सम्भव है? क्या हम इसके साथ हवा में उड़ सकते हैं? अभी यह पूर्व की ओर उड़ रहा था न? क्यों ठीक है न?" धूमक ने पूछा।

सोमक ने सिर हिलाकर हाँ कहा।

"हम यह भेद किसीको न बतायेंगे कि इसमें महिमा है। राजकुमारी कान्तिसेना को ढूँढ़ निकालने की जिम्मेवारी हम पर आ पड़ी है न? यह मन्त्रदण्ड इस काम में हमारी मदद कर सकता है।" धूमक ने कहा। फिर दोनों घोड़ों पर सवार होकर गंगाधर के पास गये।

"विप्लवकारियों को बिना किसी रक्तपात के कदम्ब नगर को भेज देने के उपलक्ष्य में हम तुम दोनों का अभिनन्दन करते हैं। पर जो तुमने उनको वचन दिया है, वह सुन मुझे आश्चर्य हो रहा है। तुम राजकुमारी कान्तिसेना को राक्षस के यहाँ से कैसे छुड़ा सकते हो?" मन्त्री गंगाधर ने पूछा।

"इसके लिए प्रयत्न करेंगे। हम इस प्रयत्न में मरने तक के लिए तैयार हैं। हमने अपने लोगों को वचन दिया है।" धूमक ने कहा।

"दोनों में तुम सरदार जान पड़ते हो। अगर तुम मेरी लड़की को ले आये,

तो तुम्हें आधा राज्य दे दूँगा, धूमक।" राजा उग्रसेन ने कहा।

"एक बात, आपके पास तो अभी राज्य ही नहीं है, दूसरी बात, अगर हो भी तो मुझे आपका आधा राज्य लेने की इच्छा नहीं है।" धूमक ने गुस्से में कहा।

कदम्ब मन्त्री कोशाधिकारी ने तरेरते हुए धूमक की ओर एक कदम रखा ही था कि गंगाधर ने उनको रोककर कहा—"इसे ही शायद कहते हैं कि रस्सी जल गई, पर बल न गये।" फिर उसने अपने सैनिकों की ओर मुड़कर कहा—"उग्रसेन महाराज को और उनके आदमियों को, अपने नगर ले जाकर, उनको मुक्त करने की व्यवस्था करो।"

राजा उग्रसेन, उसका मन्त्री और कोशाधिकारी कुन्तल सैनिकों के साथ जैसे ही नाले के पार गये, वैसे ही मन्त्री गंगाधरने धूमक से पूछा—"मैं तुम दोनों को कुन्तल राज्य के सैनिकों की पोषाक देता हूँ। यही नहीं तुम्हें एक अधिकार पत्र भी दूँगा कि तुम कुन्तल राजा के काम पर जा रहे हो। उसके कारण जरूरत पड़ने पर तुम किसी भी राजा से सहायता माँग सकते हो।"

धूमक ने इस पर कृतज्ञता व्यक्त की। सेनापति के द्वारा मँगाये गये वस्त्र धूमक और सोमक को दे दिये गये। उन दोनों ने वे वस्त्र धारण किये। मन्त्री से विदा लेकर धूमक ने जाते जाते कहा—"प्रभू, आपके लड़के शशिकान्त के बारे में क्या सोचा जाये? हमें यही न सोचना पड़ेगा कि वे जिन्दा हैं।"

"इसमें कोई शक नहीं है। मेरा विश्वास है कि कालशम्बर मान्त्रिक

शशिकान्त को अपने साथ ले गया है। अगर तुमने राक्षस को खोज लिया, तो पता लग जायेगा कि कान्तिसेना कहाँ है। अब मुझे यह मालूम करना है कि मान्त्रिक कहाँ है? इस काम के लिए मैं शशिकान्त के मित्र भद्रक को कुछ सैनिक देकर भेजूँगा।" मन्त्री गंगाधर ने कहा।

धूमक ने इन बातों के बारे में कुछ न कहा। गंगाधर को नमस्कार करके, सोमक को साथ लेकर पूर्व दिशा की ओर निकल पड़ा। उसका यह विश्वास था कि यदि यह मालूम कर लिया गया कि मान्त्रिक कहाँ है, तो उससे कुम्भीर के निवास स्थान के बारे में जाना जाना आसान था। उनके सम्भाषण को सुनकर ही उसका यह विश्वास बना था। वे दोनों शत्रु थे।

धूमक और सोमक पहाड़ी रास्तों से कुछ दूर गये। दुपहर के समय वे एक घने ज़ंगल में पहुँचे। वहाँ उन्हें एक नाला दिखाई दिया। दोनों बड़े भूखे थे। नाले के किनारे बैठकर उन्होंने साथ लाया हुआ खाना खा पीकर पेड़ों के नीचे आराम करने की सोची।

दोनों घोड़ों पर से उतरे। उन्हें पेड़ों से बाँध दिया। जब वे नाले के पास गये, तो रेत में उनको कुछ पदचिन्ह दिखाई दिये। उनमें से एक पर धूमक की दृष्टि केन्द्रित थी। यह साधारण पदचिन्ह न थे। यह उस आदमी के पदचिन्ह थे, जिसने खड़ाऊ पहिन रखी थीं।

धूमक चकित होकर उनको देखने लगा। प्रायः योगी और साधु ही खड़ाऊँ पहिनते हैं, इस जंगल में भला उनका क्या

काम है ? तो यह मान्त्रिक कालशम्बर के ही पदचिन्ह हैं। बगल में शशिकान्त के पदचिन्ह हो सकते हैं।

"सोमू, ये कालशम्बर के पदचिन्ह हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं है।" धूमक ने कहा।

तब सोमक अन्यमनस्क-सा हो कुछ सोच रहा था।

सोमक ने भौहें सिकोड़कर सिर हिलाते हुए कहा—"धूमू, हम गलत रास्ते पर आये हैं। राजकुमारी को तो राक्षस उठा ले गया था न ! हम तो उसे ढूँढ़ने आये हैं। इस मान्त्रिक को खोजने में क्यों समय खराब किया जाये ! क्या हमारी अक्ल मारी गई है ?"

धूमक ने उसे अपना ख्याल बताया। हमारे पास कोई ऐसा आधार नहीं है, जिससे हम जान सके कि राक्षस किस ओर गया है। क्योंकि हमारे पास मन्त्रदण्ड है और उसने पूर्व की ओर उड़ने की कोशिश की थी, इसलिए कालशम्बर का पकड़ना आसान है और उससे कुम्भीर के ठिकाने के बारे में जाना जा सकता है।"
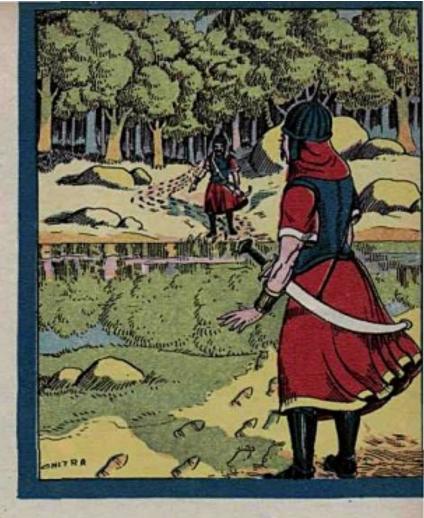
"हाँ, यह बात तो ठीक है।" सोमक ने सिर हिलाया। पर उसे यह कुछ टेढ़ा-सा, लम्बा-सा रास्ता लगा। धूमक नाले के पास गया। उसने पानी पिया। पानी में उतरकर वह उस पार गया। पानी घुटने तक ही था। नाले के पार भी धूमक को पदचिन्ह दिखाई दिये। उसने सोमक को नाला पार करके आने के लिए कहा।

सोमक के पास आते ही उसने उनको वे चिन्ह दिखाते हुए कहा—"मान्त्रिक इस नाले को पार करके बहुत देर पहिले

सम्भल सम्भलकर धीमे धीमे उस तरफ गये। वे जब इस तरह कुछ दूर गये, तो उनको दायीं ओर के पेड़ के पीछे से तालियाँ सुनाई पड़ीं।

"सोमू, हमें घेरकर कोई मारना चाहता है। हमारा नाले के पास चले जाना ही अच्छा है। वहाँ हम पर कोई छुपा छुपा आक्रमण नहीं कर सकता है।" धूमक ने कहा। दोनों मुड़कर जब नाले की ओर भागने लगे, तो सीटियाँ और तालियों से सारा जंगल गूँजने लगा। तुरत चार पाँच जंगली पेड़ की टहनियों पर से उन पर कूदे और कुछ जंगली जोर जोर से चिल्ला चिल्लाकर उनको घेरने लगे।
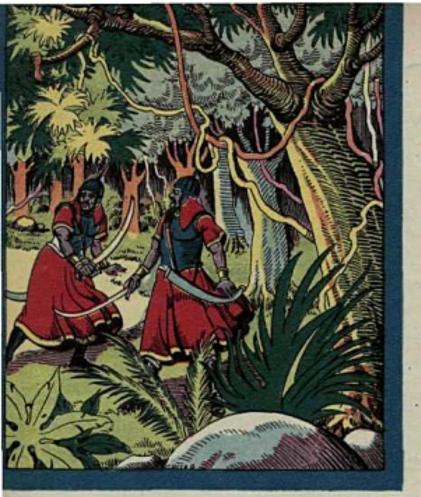
नहीं गया है। अगर भोजन के लिए बिना रुके, आगे गये तो हम शायद उससे मिल सकते हैं।"

"तो चलो वैसा ही करें। घोड़ों को ले आता हूँ।" सोमक यह कहकर मुड़ा ही था कि पास के पेड़ों के पीछे से किसी के ताली पीटने की ध्वनि सुनाई दी। धूमक और सोमक तलवार निकालकर उन पेड़ों के पास गये, पर वहाँ कोई न था। वे चकित होकर पीछे लौट रहे थे कि एक और तरफ़ से तालियाँ और सीटियाँ सुनाई दीं। धूमक और सोमक इस बार

इतना भी समय न था कि धूमक और सोमक एक दूसरे को देख पाते। दोनों एक साथ "जय कालेरम्मा" कहते, जंगलियों पर जा टूटे। वे बिजली-सी चमकती तलवारें घुमाने लगे। धूमक और सोमक को यूँ तलवार चलाता देख जंगली जो उन्हें पकड़ने आये थे, दूर पेड़ों की और जा गिरने लगे।

दो तीन मिनट हो गये। भले ही कितना बल हो, तलवार चलाने में कितने

ही निपुण हों जब जंगली भेड़ियों के झुण्ड की तरह आने लगे, तो धूमक और सोमक के लिए उनका मुकाबला करना मुश्किल हो गया। जंगलियों के फेंक हुए भाले उनके शरीर पर लगे और उनके घावों से खून बहने लगा। आखिर वे तलवार भी न चला सके। जंगली जत्थों में आये और उन्होंने उन दोनों को पकड़ लिया।

जंगलियों के आनन्द की सीमा न थी। उनमें से कुछ मर गये थे। कुछ घायल हो कराह रहे थे। कई पड़े पड़े छटपटा रहे थे। परन्तु बाकी जंगली इस खुशी में कि उन्होंने धूमक और सोमक को पकड़ लिया था, उनको घेरकर नाचने कूदने लगे। दूर किसी के ताली बजाने की ध्वनि सुनाई पड़ी। नाचनेवालों में से कुछ वह ध्वनि सुनकर उस ओर मुड़कर चिल्लाने लगे। "निरूपो निरूपो।" कुछ देर में वहाँ एक आजान बाहु जंगली हाथ में भाला लेकर "आहा....शाम्भवी" भयंकर रूप से चिल्लाया। आँखे लाल करके दान्त पीसते, धूमक और सोमक को मारने के लिए भाला उठाकर आगे कूदा।

धूमक और सोमक ने यह सोच कि उनकी मृत्यु पास आ गई थी, दिल कड़ा करके आँखें मूँद लीं। उन दोनों को जो इस डर में थे कि भाले की चोट उनके सीनों पर होनेवाली थीं, बड़ा आश्चर्य हुआ। जंगलियों के सरदार ने उठाया हुआ भाला यकायक नीचे छोड़ दिया और उसने कहा—"महाशय, हम लोगों की गल्ती माफ़ कीजिये।" फिर उसने धूमव और सोमक को साष्टान्ग किया।

(अभी है)

सांयोगिक विवाह

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर हमेशा की तरह कन्धे पर डाल चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, तुम किस लिए इतने कष्ट उठा रहे हो, यह मुझे नहीं मालूम है। परन्तु यदि भाग्य ने साथ दिया, असम्भव इच्छायें भी आसानी से पूरी हो जाती हैं। इसके दृष्टान्त के रूप में तुम्हें कन्दर्प नाम के ब्राह्मण युवक की कहानी सुनाता हूँ। सुनो, ताकि थकान न मालूम हो।" उसने यूँ कहानी सुनानी शुरु की।

वेणा नदी के तट पर रत्नपुर नाम का कस्बा था। उसमें एक धनी ब्राह्मण के कन्दर्प नाम का लड़का था। एक दिन शाम को कन्दर्प नदी में स्नान करने गया।

वेताल कथाएँ

बातें कर रही थीं। "आज चक्रपुरी में चक्र मेला चलेगा। हमें वहाँ जाना है। परन्तु यह लड़का हमारी शरण में आया है। इसे कैसे हम अकेले इस जंगल में, जहाँ भयंकर क्रूर जन्तु हैं, छोड़कर जायें? इसे किसी के घर रख जायें और वापिस आते समय इसे ले आयेंगी।" उन देवियों ने निश्चय किया।

उसको, उन्होंने खूब सजाया संवारा। आकाश मार्ग से उसे ले गईं। रत्नापुर में जयदत्त नाम के एक ब्राह्मण के घर उसे छोड़कर वे अपने रास्ते चली गईं।
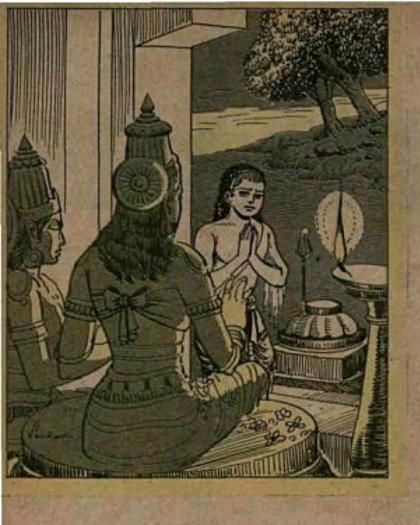
उसका पैर फ़िसल गया और वह नदी में बहने लगा। रात भर कन्दर्प बहता गया। सवेरे के समय नदी में आयी हुई एक बड़े पेड़ की टहनी से वह लगा। उस टहनी से वह तट पर गया, उसे पास ही देवियों का एक मन्दिर दिखाई दिया। वह उसके अन्दर गया। देवियों को नमस्कार किया, उसने प्रार्थना की—"माता, इस दीन की रक्षा करो।" वह थका हुआ था, इसलिए वह वहीं सो गया।

दिन बीत गया। रात आई। जब वह उठा, तो उसने पाया कि देवियाँ आपस में

संयोगवश, उसी दिन जयदत्त की लड़की सुमन का विवाह हो रहा था। विवाह की तैयारियाँ पूरी हो चुकी थीं। सुमन को दुल्हिन बनाया गया। पुरोहित आदि दूल्हे के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। मुहूर्त का समय समीप आ रहा था, पर कहीं बरात का पता न था। इतने में किसी ने कन्दर्प को देखा। "यह रहा दुल्हा...." किसी ने कहा। सब मिलकर उसे विवाह वेदिका पर ले गये। जयदत्त ने विधिवत उसका अपनी लड़की से विवाह कर दिया। कन्दर्प का सौंदर्य देखकर, विवाह में

उपस्थित स्त्रियों ने कहा—"सुमन कितनी सौभाग्यशालिनी है। मन्मथ-सा पति उसको मिला है।"

विवाह की विधि समाप्त हो गई थी, पर रात अभी शेष थी। कन्दर्प कोठे पर जाकर सो गये। सवेरा हो रहा था कि चक्रमेले से वापिस आती आती देवियाँ उसको उठाकर ले गईं।

पर दुर्भाग्य से जब वे आकाशमार्ग से जा रही थीं, तो उनको एक और जत्था मिला और उन्होंने कन्दर्प का अपहरण करना चाहा। दोनों जत्थों में जब झगड़ा हुआ, तो कन्दर्प देवियों के हाथ से नीचे फिसलकर गिर पड़ा।

यह सोचकर कि अब उसे कष्ट झेलने पड़ेंगे, जो रास्ता उसे दिखाई दिया, वह उसी पर चलने लगा। उसे यह भी याद न था कि कहाँ उसका विवाह हुआ था। वह केवल इतना ही जानता था कि जिस कन्या से उसका विवाह हुआ था, उसका नाम सुमन था। रास्ते में एक और ब्राह्मण युवक उसका मित्र बन गया। कन्दर्प ने उसको अपने कष्टों के बारे में बताया और उसके साथ चलने लगा। वे चलते चलते उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ रत्ना नदी समुद्र में मिलती थी। वहाँ एक गाँव था, जिसका नाम भीमपुर था।
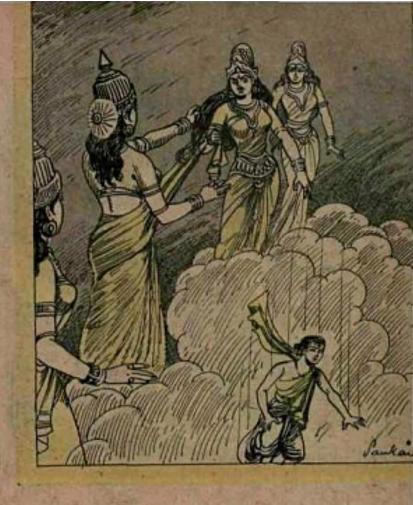
वे जब वहाँ पहुँचे तो नदी के किनारे लोगों का जमघट था। कन्दर्प, अपने साथी के साथ यह देखने गया कि वे लोग वहाँ क्यों जमा थे?

ज्वार में, एक बड़ा मच्छ किनारे पर आ लगा था, माँस के लिए कुछ उस मच्छ को काट रहे थे। जब वे उसे काट रहे थे, तो उसके पेट में से एक जीवित स्त्री बाहर निकली।
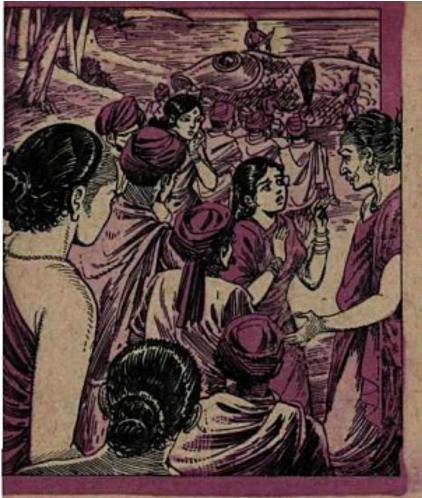
वह कन्दर्प की पत्नी सुमन ही थी, उसे पहिचान कर कन्दर्प ने अपने मित्र से कहा—"यह स्त्री मेरी पत्नी सुमन है। तुम कुछ न बोलो, देखें, क्या होता है?"

इस बीच पाँच दस आदमी सुमन को घेर कर खड़े हो गये। "तुम कौन हो? कैसे इस मच्छ के पेट में तुम घुस गई?" वे उससे पूछने लगे। "मैं रत्नापुर की हूँ। मेरे पिता का नाम जयदत्त है। मेरा नाम सुमन है। पिछले दिनों मेरा विवाह एक सुन्दर युवक से हुआ। पर सवेरा होते ही मेरा पति मुझे नहीं दिखाई दिया। मेरे पिता ने उनकी बहुत खोज करवाई, पर वे कहीं न मिले। मैं इस जीवन से ऊब गई। मैं आत्महत्या करने के लिए नदी में जा कूदी। जब मैं उसमें बही जा रही थी, तो मुझे एक मच्छ निगल गया और उसके पेट में से तुमने मुझे बाहर निकाला।

वह यूँ कह रही थी कि यज्ञस्वामी नाम का एक ब्राह्मण भीड़ को चीरता हुआ आगे आया। "अरे सुमन, क्या का क्या हो गया" यह कहते हुए उसने उसका आलिंगन किया।

सुमन ने सिर उठाकर देखा वह उसका मामा ही था, "मामा....मामा" कहती वह जोर से रो पड़ी।

"रोओ मत बेटी, चलो अपने घर चलें।" यज्ञस्वामी ने कहा।

"क्यों, मामा? मैं तो ज़िन्दा ही नहीं रहना चाहती। अगर जीना ही था तो अपने घर ही रहती। मैं अपने पति को छोड़कर नहीं रह सकती। मेरे लिए यहीं चिता बनाओ। मैं उसी में जलकर अपने प्राण तज दूँगी।" सुमन ने कहा।

यज्ञस्वामी ने ही नहीं, औरों ने भी उसे आत्महत्या करने से रोका। परन्तु सुमन

ने अपना निश्चय न छोड़ा। तब कन्दर्प उसके सामने आया। सुमन ने उसको पहिचान लिया और उसके पावों पर पड़कर वह खुशी के आसूँ बहाने लगी।

"कौन है यह?" यज्ञस्वामी ने और औरों ने भी सुमन से पूछा।

"ये ही मेरे पति हैं" सुमन ने मुस्कराते हुए कहा।

यज्ञस्वामी बड़ा खुश हुआ। वह सुमन और कन्दर्प को कुछ दिनों के लिए अपने घर ले गया। कुछ समय तक उनको अपने यहाँ रखा। फिर उन्हें भेज दिया। कन्दर्प तब कुछ दिनों के लिए अपने ससुराल गया फिर वहाँ से अपने घर।

बेताल ने यह कथा सुनाकर कहा—"राजा, मुझे एक सन्देह है। कन्दर्प, क्यों नहीं, सुमन के दीखते ही उसके सामने गया। क्यों तब तक देखता रहा जब तक वह चिता में जलने के लिए न तैयार हो गई? इस प्रश्न का तुमने जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"सुमन उसको संयोग से पत्नी के रूप में मिली थी। पर कन्दर्प को यह जानकर अधिक खुशी होती कि वह वस्तुतः उसको प्रेम कर रही थी। आत्माभिमानी, बिना योग्यता के वर नहीं चाहते। इसलिए वे, भाग्य की अपेक्षा अपने प्रयत्नों को ही अधिक महत्व देते हैं। कन्दर्प ने आत्माभिमानी की तरह ही व्यवहार किया।

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य होकर पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

दुरभिमान

एक गाँव में रामशरण नाम का एक ज़मीन्दार रहा करता था। उसकी पत्नी की बीमारी बढ़ती गई। बीमारी क्या थी, यह वैद्य ठीक तरह न जान सके।

रामशरण के गाँव के पास, एक गाँव में एक ज्योतिषी रहा करता था, वह प्रश्नों का उत्तर दिया करता था। अगर किसी को कोई चाह होती, तो वह दक्षिणा लेकर उसके पास पहुँचता और ज्योतिषी उसका काम जानकर उनकी चाह पूरी करने का उपाय बताता। पर एक बात थी जो कुछ वह कहता, उसे ध्यान से सुनकर ठीक तरह समझना चाहिए था। अगर कोई न सुनता, या बिना सुने कोई प्रश्न करता, तो वह आगबबूला हो उठता। सुननेवाला कितना ही बड़ा हो, पहिले उसे फटकार बताता, फिर अपनी बात को साफ़ साफ़ बताता। इसलिए लोग उसके पास आते जाते कुछ डरते। जिसके लिए काम मुख्य होता वे ही उसके पास जाया करते और उसकी फटकार सुनने के लिए भी तैयार रहते। जो कुछ वह बताता अगर वह किया जाता, तो अक्सर फायदा ही होता।

रामशरण ने कई बार सोचा कि इस ज्योतिषी से मिलकर क्यों न अपनी पत्नी की बीमारी ठीक की जाये। चूँकि वह उसकी फटकार सुनने के लिए तैयार न था, इसलिए वह उसके पास नहीं गया था। पर रामशरण जान गया कि अगर पत्नी की बीमारी ठीक करवानी थी, तो ज्योतिषी के पास जाना ही पड़ेगा।

इसलिए वह एक अच्छे दिन दक्षिणा लेकर ज्योतिषी को देखने गया।

ज्योतिषी की सफेद दाढ़ी थी। बड़ी मूँछे थीं। बड़ा तेजस्वी जान पड़ता था। रामशरण के सामने बैठते ही उसने कहा—"तुम्हारा नाम रामशरण है। तुम्हारी पत्नी बीमार है। तुम यह जानने के लिए आये हो कि कैसे उसकी बीमारी ठीक होगी। तुम अभिमानी हो। दुरभिमानी हो। कुछ भी हो। आये हो। तुमने प्रकृति के विरुद्ध कार्य किया है। सहज सिद्ध प्रवाह को तुमने रोका है। उस रुकावट को हटा दो। तुम्हारी पत्नी की बीमारी ठीक हो जायेगी। व्यर्थ तुम दवाइयों पर पैसा न खराब करो। जो मैंने कहा है वह मालूम हो गया है न?"

रामशरण मन ही मन अचरज कर रहा था, उसने यह दिखाते हुए कि वह उसकी बात समझ गया था, सिर हिलाया। पर सच कहा जाये तो रामशरण को कुछ न समझ में आया था। रामशरण को डर लगा कि यदि उसने यह कहा कि उसे न समझ आया था, तो न मालूम वह क्या क्या कहे। इसलिए वह उठकर घर चला आया।
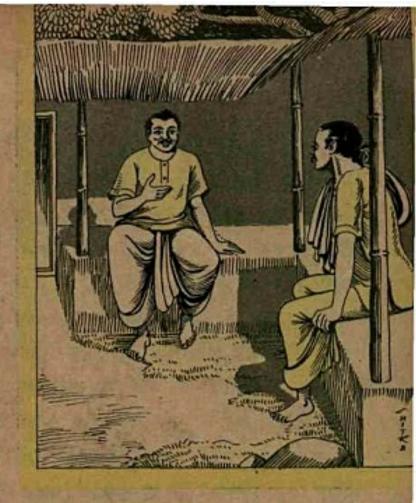
ज्योतिषी की बातों पर सोचते सोचते उसे एक बात याद आई। चूँकि रामशरण बलवान था, इसलिए उसने अपने खेत के पास के रजभाह में पिछले साल बाँध बनाया और अपने खेत में पानी छोड़ दिया और सोमू के खेत में पानी न जाने दिया। इसी कारण उसकी पत्नी को बीमारी हुई थी। रामशरण ने समझा कि शायद ज्योतिषी का मतलब यही था।

इसलिए रामशरण ने सोमू को बुलाकर कहा—"देखो भाई सोमू! पिछले साल तुम्हें रजभाह का पानी न मिला। तालाब

का पानी तुम्हारे लिए काफ़ी न रहा। आगे यह मेरी जिम्मेवारी रही कि तुम्हें रजभाह का पानी मिलता रहे।" उसने यह कहकर उसे भेज दिया और अपने लोगों से उसने बांध तुड़वा दिया।

रामशरण ने तब सोचा कि उसकी पत्नी ठीक हो जायेगी। पर वह ठीक न हुई। ज्योतिषी की बात पर रामशरण फिर सोचने लगा। पर उसे कुछ समझ में न आया। इसमें जरूर कोई गूढ़ अर्थ होगा जिसे ज्योतिषी को ही बताना होगा। लाचार हो रामशरण को ज्योतिषी के पास फिर जाना पड़ा। ज्योतिषी ने उसे देखते ही पूछा—"तो फिर आये हो? मैंने पहिले ही कहा था कि तुम दुरहंकारी हो। मैंने तुम्हें जो सलाह दी थी, वह तुम्हें समझ में नहीं आई। तुम्हारे अभिमान ने तुम्हें यह भी न कहने दिया कि तुम्हें समझ में नहीं आया था, बताता हूँ, सुनो, इस दुरहंकार के कारण ही तुमने अपनी पत्नी को, उसके माईके से अलग किया। उसका अपने माईके के प्रति प्रेम सहज प्रवाह सा है। किसी छोटी मोटी बात पर तुमने इस बात में रुकावट पैदा की। तब से तुम्हारी पत्नी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। उसे आधि है। जाओ तुम अपने ससुरालवालों से माफी माँगो। उन्हें बुलाओ। उन्हें देखकर, तुम्हारी पत्नी ठीक हो जायेगी।"

वह उसी दिन ससुराल गया। सास ससुर से प्रेमपूर्वक बात की, और जब उसने अपने माँ बाप को देखा, तो रामशरण की पत्नी की बीमारी भी जाती रही। कुछ ही दिनों में वह तन्दुरुस्त हो गई और घूमने फिरने लगी।

यक्ष का परिहास

यशस्थल नामक प्रदेश में सोमगिरि नाम का एक किसान था। उसके ज़मीन जायदाद थी। गौ, भैंसें वगैरह भी थीं। चूँकि वह लोभी था, इसलिए सब काम स्वयं देखता। एक दिन सवेरे जब सोमगिरि पशुओं का काम देखकर, खेत जा रहा था, तो रास्ते से कुछ हटकर, किसी के खुर्राटे मारने की आवाज़ सुनाई दी। जब सोमगिरि ने जाकर देखा, तो पेड़ों के बीच में एक ऊँचे कुकरमुत्ता के नीचे एक बौने को सोता पाया।

बौने की शक्ल सूरत, उसका पेट, छोटे पैर और हाथ देखकर सोमगिरि ने सोचा कि वह कोई यक्ष था। उस प्रदेश में कभी कभी यक्ष देखे जाते थे। यक्ष, मनुष्यों से मैत्री करके उनका कितना ही उपकार किया करते थे, पर वह समय अब नहीं रहा। सोमगिरि ने सोचा कि अगर उस सोते यक्ष को पकड़ लिया गया, तो उसकी मदद से एक बड़ा खजाना पाया जा सकता है। इसलिए तुरत जाकर, उसने उस यक्ष को पकड़ लिया।

"मुझे क्यों पकड़ा है? छोड़ दो।" यक्ष उठकर अपने को छुड़ाने लगा।

"अरे बहुत दिन बाद मिले हो। मुझे एक खजाना चाहिए। जब तक तुम यह नहीं बताओगे कि वह कहाँ मिलेगा, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।" सोमगिरि ने कहा।

"मैं नहीं जानता धन कहाँ गड़ा रखा है। फिर मैं तुम्हें कैसे बताऊँ?" यक्ष ने कहा। "अगर तुमने सीधे ढंग से न कहा, तो जो कुछ करना है मैं कर
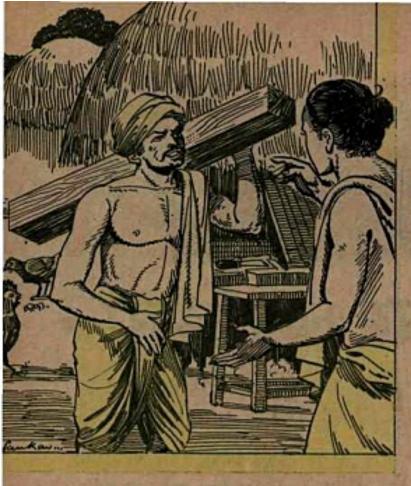
देखूँगा।" यह कहकर सोमगिरि, यक्ष को अपने घर ले गया, और उसे एक अलमारी में रखकर, उस पर ताला लगा दिया।

एक महीना बीत गया। एक बार सोमगिरि जब जंगल के ईलाके में गया तो उसे वापिसी रास्ते में एक पेड़ का तना मिला। वह सब तरफ से तराशा हुआ था। वह उस जंगल में कहां से आया था, वह न जान सका। फिर भी वह उसे कन्धे पर डाल, गांव लाया। उसे शरभ बढ़ई को बेचकर दो रुपये लेकर सीधे घर आया।

सोमगिरि ने घर में पैर रखा था कि अलमारी में से उसको यक्ष का हँसना सुनाई दिया। सोमगिरि ने यक्ष से कहा—"महीने-भर से तुम्हें बन्द कर रखा है, तब भी तुम्हें अक्ल नहीं आई है। एक खजाना बताकर, अपने रास्ते घर जाने के बजाय, तुम यहाँ बैठे, अपने आप हँस रहे हो, देखें कब तक इस अलमारी में रहते हो।"

इसके कुछ दिनों बाद सोमगिरि के घर एक दूर का सम्बन्धी आया। वह उस तरफ से कहीं जा रहा था। रास्ते में सोमगिरि को देखने के लिए रुका, कुछ देर सोमगिरि से बातचीत करते वह निकल पड़ा।

"खाना खाकर जाओ न?" सोमगिरि ने सम्बन्धी से कहा।

वह सम्बन्धी सोमगिरि की बात जानता था। इसलिए उसने उससे कहा—"नहीं, बहुत दूर जाना है।" वह चल पड़ा वह घर छोड़कर अभी पाँच दस कदम गया होगा कि एक बछड़ा दौड़ा दौड़ा आया, उसे गिराकर, कुचलकर चला गया। उस सम्बन्धी का पैर टूट गया। सोमगिरि को उसे घर रखकर, उसकी महीने-भर चिकित्सा

करवानी पड़ी। सोमगिरि जब अपने सम्बन्धी को घर में ला रहा था तो अलमारी में बन्द यक्ष फिर जोर से हंसा। सोमगिरि ने यूँ दिखाया जैसे उसने उसका हँसना सुना ही न हो।

एक और महीना बीता, एक दिन सोमगिरि हाट गया। उसने अपना रुपया एक जगह गाड़ रखा था। उन दिनों जिसके पास अधिक पैसा होता था, वह वैसा ही करता था। सोमगिरि उस गढ़े के पास गया, जितने पैसे की ज़रूरत थी, उतने लेकर बाकी को वहीं रखकर हाट गया। यह किसी ने देख लिया। उसने सोमगिरि के जाने बाद वह गढ़ा खोदा और वहाँ गड़े हुए पैसे को ले लिया और गढ़े को पहिले की तरह बन्द करके, चला गया।

शाम जब सोमगिरि हाट में कुछ चीजें खरीदकर, घर आया तो अलमारी में बन्द यक्ष फिर जोर से हँसा।

सोमगिरि को बड़ा गुस्सा आया। वह अलमारी की चाबी लाया। अलमारी खोली। यक्ष को बाहर निकालकर कहा— "तुम्हें दो महीने से यहाँ कैद कर रखा
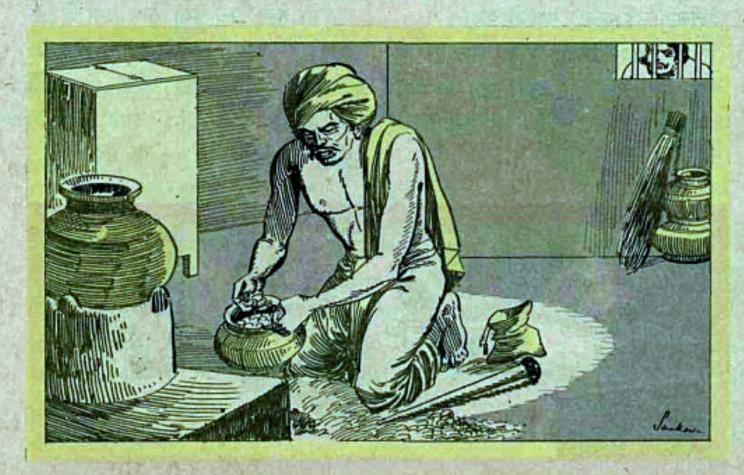
है। तुम्हारा मेरा उपकार करना तो अलग, तुम मुझ पर ही तीन बार हँसे। अगर तुमने हँसने का कारण न बताया, तो गला घोंटकर तुम्हें मार दूँगा। बताओ तुम्हारी हँसी का क्या कारण है?"

"एक रोज तुम्हें एक तराशा हुआ तना मिला। तुमने उसे शरभ बढ़ई को दो रुपये में बेच दिया। क्योंकि तुम निरे बेअक्ल हो, इसलिए तुम उसमें रखे अमूल्य सोना और रत्नों के बारे में न जान सके। शरभ उनको लेकर लखपति बनकर अब आराम से जी रहा है। तुम्हारी बेअक्ली देखकर मैं हँसा।" यक्ष ने कहा।

यह बात सुनकर मानों सोमगिरि की अक्ल जाती रही। "दूसरी बार जब हमारे सम्बन्धी का पैर टूटा, तब तुम क्यों हँसे?" उसने यक्ष से पूछा।

"तुम्हारी मूर्खता पर हँसा। अगर तुम उस सम्बन्धी को खिला पिलाकर भेजते, तो उसका पैर न टूटता, न तुम्हें महीने भर उसे खिलाने पिलाने का बोझ अपने पर लेना पड़ता।" यक्ष ने कहा।

"तो अब क्यों हँस रहे हो?" सोमगिरि ने पूछा।

"इसलिए कि जो रुपया तुमने गाड़ रखा था, उसे चोर उठा ले गये हैं। जब तुम सवेरे गढ़े में से पैसे ले रहे थे, तभी चोर ने तुम्हें देख लिया था। तुम जैसा मूर्ख मैंने कहीं नहीं देखा है।" यक्ष ने कहा।

"तो मेरा सारा पैसा चला गया है।" जोर से चिल्लाकर सोमगिरि उस गढ़े के पास गया। एक कानी कौड़ी भी उसमें चोर ने न छोड़ी थी। जब सोमगिरि वापिस घर पहुँचा, तो यक्ष भी न था।

बाँवली मेघा
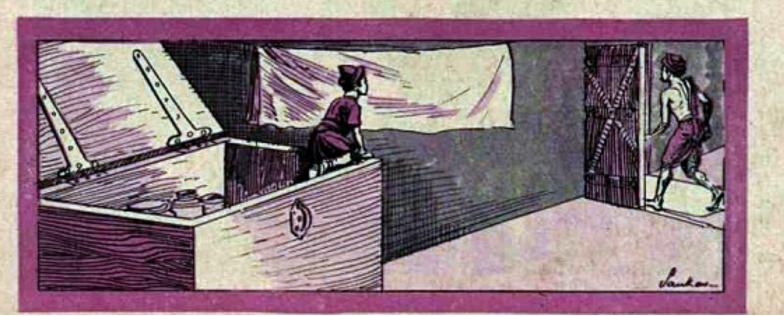
एक गाँव में एक किसान रहा करता था। उसकी पत्नी बहुत पहिले गुजर गई थी। गाँव में मेघा नाम की एक लड़की रहा करती थी। किसान उससे घर के काम करवा लेता था। "सारा घर का काम मैं ही तो कर रही हूँ, क्यों नहीं मुझसे शादी कर लेते हो?" मेघा अपने मालिक से पूछा करती।

"अरे, अगर शादी करनी भी पड़े, तो क्या तुमसे ही करूँ?" किसान कहता।

एक दिन मेघा ने कहा—"मुझमें क्या कमी है? मेरे होते क्या कोई और स्त्री इस में कदम रख सकेगी?" दिन रात वह अपने मालिक के यूँ कान खाया करती। किसान उससे इतना तंग आ गया कि जब एक दिन दुपहर को, खेत में काम कर, खूब थक थकाकर सोई हुई थी, तो उसने उसके शरीर पर कालिख पोत दी।

शाम जब मेघा उठी, तो अपने हाथ पैर देखकर वह ही हँसी। मैं हूँ या कोई भूत? वह सीधे अपने मालिक के घर गई, जाते ही पूछा—"क्या मेघा घर में है?"

"हाँ, वह घर में ही है।" किसान ने यह सोचकर कहा कि अब उसका पिंड छूट गया था।

"तो यानि, मैं मेघा नहीं हूँ।" सोचती मेघा, अन्धेरे में जंगल की ओर चलने लगी। जंगल में उसे दो चोर दिखाई दिये। वे उसे देखकर, डरकर भागने लगे।

"अरे....क्यों, पागल, भागे जा रहे हो। चोरी के लिए जा रहे हो, तो मुझे
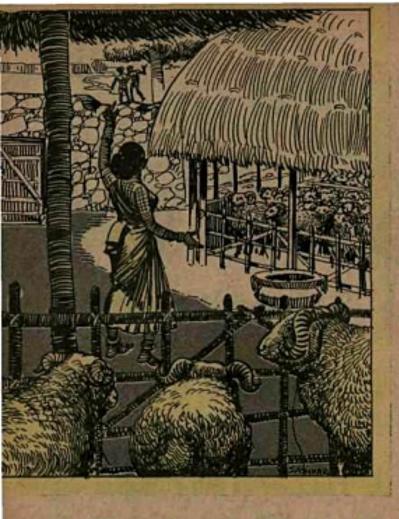
ले जाओ। मैं तुम्हारी मदद करूँगी।" मेघा चिल्लाई।

चोरों ने यह सोचकर कि भूत का साथ भी अच्छा था, डरना छोड़ दिया। वे मेघा के पास गये। उन्होंने कहीं से एक भेड़ चुराने की ठानी। पर भेड़ कहाँ मिल सकती थी, यह वे न जानते थे।

"यह सब काम मुझ पर छोड़ दो। अन्धेरे में भी मैं भेड़ों के घेरे में जा सकती हूँ।" मेघा ने कहा। चोर खुशी खुशी मेघा के साथ चल दिये। चोरों को बाहर छोड़कर वह घेरे में घुस गई। जब चोर भेड़ की इन्तज़ार कर रहे थे, तो मेघा अन्दर से चिल्लाई—"नर भेड़ चाहिए....या मादा, यहाँ बहुत-सी भेड़ें हैं।"

"चिल्ला मत। जो कोई मोटी ताजी हो, उसे ले आ!" चोरों ने कहा।

"हाँ हाँ, मोटे ताजे....पर नर चाहिए या मादा...." मेघा और जोर से चिल्लाई।

"चिल्लाती क्यों हो? मोटी ताजी हो बस, चाहे नर हो या मादा।" चोरों ने कहा।

"यहाँ बहुत-सी भेड़े हैं....नर चाहिए, या मादा। जो चाहो वे हैं।" मेघा और जोर से चिल्लाई।

"अरे....जबान बन्द कर, जो मिले, ले आ।" चोर चिल्लाये। इतने में मेघा का चिल्लाना सुनकर, भेड़ों का मालिक बाहर चला आया और चोर इस बीच भाग निकले।

"ठहरो....ठहरो...." कहती मेघा, पेड़ों के बीच में से भागती आई।

मेघा को देखते ही, भेड़ों के मालिक को लकवा-सा मार गया। उसने सोचा कि उसकी भेड़ो में कोई भूत आ गया था।

उस दिन न चोरों को ही कुछ खाने को मिला, न मेघा को ही। अगले दिन

अन्धेरा होते ही, वे एक मुरगी चुराने निकले। पर वे न जानते थे, कहाँ से मुरगी चुराई जा सकती थी।

"वह काम मुझ पर छोड़ दो। गाँव में कहाँ मुरगे मुरगी हैं, मैं जानती हूँ।" मेघा उनको साथ लेकर गाँव गई। वह चोरों को बाहर छोड़कर मुरगी पकड़ने गई। "अरे यहाँ बहुत से मुरगे मुरगियाँ हैं, मुरगा चाहिए या मुरगी?"

"चिल्लाती क्यों हो? जिस किसी का वज़न अधिक हो, उसको उठा लाओ।" चोरों ने कहा।

"तो बताओ, मुरगा चाहिए, या मुरगी।" मेघा फिर जोर से चिल्लायी।

"चिल्लाओ मत, एक अच्छी सी चीज़ ले आओ, मुरगा हो, या मुरगी?" चोरोंने कहा।

"नहीं, वह नहीं, बताओ मुरगी चाहिए, या मुरगा। यहाँ बहुत-सी हैं।" मेघा ने कहा। उसका चिल्लाना सुन मुरगियाँ चीखने लगीं। उनका रखवाला उठा। चोर चम्पत हो गये।
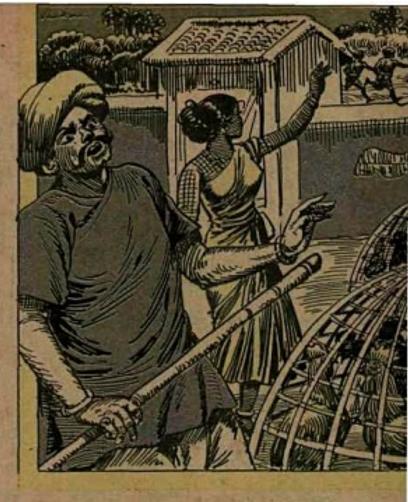
"अरे ठहरो भी बेअक़्लो। अगर मुरगा माँगते, तो मुरगा दे देती, नहीं तो मुरगी। मगर तुमने बताया ही नहीं।" कहती मेघा उनके पीछे भागी। मेघा को देखते ही, मुरगियों का रखवाला जमा जमा सा खड़ा रहा।

दो दिन से चोरों के पास खाने को कुछ न था और गाँववाले यह सोच भयभीत थे कि गाँव में भूत फिर रहे थे।

तीसरे दिन चोर फिर भेड़ की तलाश में निकले। उन्होंने मेघा को साथ नहीं आने दिया। चोरों ने समझ लिया कि अगर उस भूत को साथ ले गये, तो उनको भूखा ही मरना पड़ेगा। मेघा भी भूख के

मारे तड़प रही थी। इसलिए वह गाँव के बाहर के एक खेत में गई और वहाँ शकरकन्दियाँ उखाड़ उखाड़कर खाने लगी।

खेत में ही एक झोंपड़ी बनाकर खेतवाला रहा करता था। वह रात के समय बाहर आया। शकरकन्दी को उखाड़कर खाती हुई मेघा को देखकर उसे भूत समझकर वह सीधे भूत वैद्य के घर भागा।

भूत वैद्य उठा। कपड़े पहिनकर वह खेतवाले के साथ निकल पड़ा। खेत के रास्ते में रजभाह आता था। भूत वैद्य ने रजभाह में से जाने से इनकार कर दिया।

"मैं तुम्हें उठाकर रजभाह के पार ले जाऊँगा। यदि तुमने इस भूत को न भगाया, तो बस मुझे भीख माँगनी पड़ेगी।" कहकर खेतवाला अपनी पीठ पर भूत वैद्य को बिठाकर रजभाह पार करने लगा।

खेत में मेघा ने उनको आते देख चोर समझा। यह अनुमान करके कि वे एक भेड़ को ला रहे थे, मेघा जोर से चिल्लायी—"अच्छी चरबीवाली है न?"

खेतवाला का खून बर्फ-सा हो गया। "अरे, चरबी है कि नहीं, यह तुम ही देख लो।" कहकर खेतवाला भूत वैद्य को रजभाह में छोड़कर सिर पर पैर रख भाग गया।

जो उस दिन रात को हुआ उसकी खबर किसान को भी मिली। उसे मेघा पर दया आई। इसलिए उसने उसे खोज निकाला। अच्छी तरह नहलाया धुलाया। पुरोहित को बुलाकर, उससे शादी भी करवा ली। उसके बाद वे खुशी से रहने लगे।

पुत्र का कर्तव्य

पन्नालाल जब एक दिन अपने घर की सफेदी करवा रहा था, तो पुराना समान ठीक करते समय उसके नीचे एक कागज़ मुड़ा हुआ उसे दिखाई दिया। उस पर यह लिखा हुआ था—"मुझे गोरखपुर के रामलाल को, अपने प्राणों के लिए सौ रुपये, मेरी चिकित्सा और दवा दारु के लिए पन्द्रह रुपये, कुल मिलाकर एक सौ पन्द्रह रुपये देने हैं।"

इस कागज़ पर लिखावट पन्नालाल के पिता सोमलाल की थी। पन्नालाल इतना ही जान सका कि उसके पिता को, गोरखपुर के रामलाल को पन्द्रह रुपये देने थे पर इस ऋण के विवरण जो दिये गये थे, उसे समझ में न आये। इसलिए उसने उस पर जो लिखा था अपनी माता को सुनाया—"यह रामलाल कौन है उसका ऋण क्या है?"

माता ने कुछ देर सोचकर कहा—"हाँ हाँ थोड़ा थोड़ा याद आ रहा है, तो वह ऋण चुकाया ही न था? मुझे भला क्या मालूम? वे मुझ से कुछ कहते सुनते न थे। तीस साल पहिले की बात है तब तेरी उम्र कोई तीन साल की होगी...." फिर उसने यह बात बताई।

पन्नालाल का पिता सोमलाल बड़ा गरीब था। थोड़ी-सी ज़मीन थी और उससे गुज़ारा न होता था। इसलिए यदि कहीं भोजन भी दक्षिणा में मिलता, तो वह दूर से दूर जगह भी चला जाता।

एक बार सोमलाल, राजधानी में एक राजकर्मचारी के यहाँ गया। उनके यहाँ
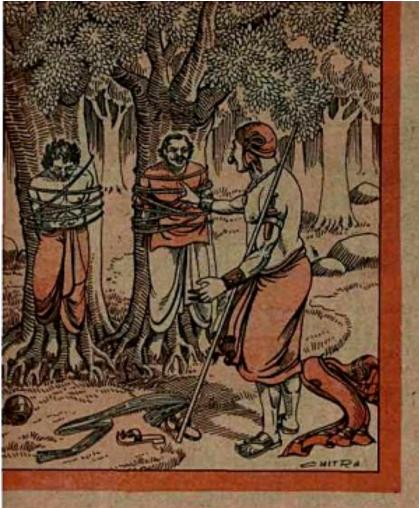
कोई शादी थी। वहाँ भोजन करके दक्षिणा लेकर जब वापिस घर आ रहा था, तो रास्ते में रामलाल मिला। वह गोरखपुर गाँव का था। वह भी शादी के लिए आया था। क्योंकि दोनों का रास्ता एक ही था, इसलिए वे गप्प मारते चले आये।

वे गोरखपुर के पास आये थे कि खूब अन्धेरा हो गया। उसी समय पेड़ के पीछे से कोई चोर आया, और उसने लाठी से दोनों के पैरों पर जोर से चोट मारी। परन्तु सोमलाल को ही चोट लगी। वह गिर गया। फिर चोर ने उन दोनों को अलग अलग पेड़ों से बाँध दिया, और उसके पास जो कुछ था, वह ले लिया। फिर उसने कहा—"तुम में से जो कोई जाकर सौ रुपया लायेगा, उसे तो छोड़ ही दूँगा, दूसरे को भी छोड़ दूँगा, जो पैसा लाने जायेगा और सवेरे तक नहीं आयेगा, या साथ किसी को लायेगा, तो जो यहाँ रह जायेगा हम उसको मार देंगे।" उसने कहा।

क्योंकि दोनों एक साथ मिले थे, इसलिए ही चोर ने यह चाल चली, अगर उनमें से कोई एक होता, तो चोर उसका सब कुछ ले लाकर चलता होता। किसी एक को जाकर, सौ रुपये लाकर, चोर को देकर, दूसरे को छुड़ाना था। सोमलाल का गाँव बहुत दूर था। वहाँ पहुँचने के लिए एक दिन का समय लगता। सवेरे होने से पहिले वापिस आ जाना असम्भव था। अगर वापिस आ भी जाता तो सोमलाल के घर कानी कौड़ी न थी, सौ रुपया कहाँ से लाता?

"मेरा गाँव पास है। मुझे छोड़ दो। मैं जाकर रुपये ले आऊँगा।" रामलाल ने चोर से कहा।

चोर ने रामलाल की मुश्कें खोल दीं। इस तरह छूटा हुआ रामलाल उसे छुड़ाने के लिए सौ रुपया लायेगा, स्वप्न में भी सोमलाल ने न सोचा था। सोमलाल ने सोचा, सवेरे वह ज़रूर मार दिया जायेगा। सिवाय भगवान से प्रार्थना करने के वह और कुछ कर भी न सकता था।

परन्तु सवेरे होने से पहिले रामलाल वापिस आ गया। "यह लो, सौ रुपये, हमें छोड़ दो और रुपये ले लो।" चोर रुपया लेकर चम्पत हो गया।

रास्ते का सिर्फ साथ था और उसने उसके प्राण बचाये थे। सोमलाल को न सूझा कि कैसे वह रामलाल के प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाये। यही नहीं, रामलाल सोमलाल का सारा भार अपने पर डालकर, उसे अपने घर ले गया। उसे चार पाँच दिन अपने घर ही रखा। उसकी चिकित्सा करके, उसका घाव ठीक करवाया।

और अजीब बात यह थी कि रामलाल का परिवार भी गरीब था। सोमलाल न जान सका कि कैसे वह रातों रात सौ रुपये का इन्तजाम कर सका था। वह सौ रुपये और चिकित्सा के लिए दिये गये, पन्द्रह रुपये कैसे वापिस दिये जायें, यह भी सोमलाल न सोच पाया। जाते समय उसने कहा जितनी जल्दी हो सकेगा, उतनी जल्दी वह एक सौ पन्द्रह रुपये उसे दे देगा। वह उससे विदा लेकर चला गया।
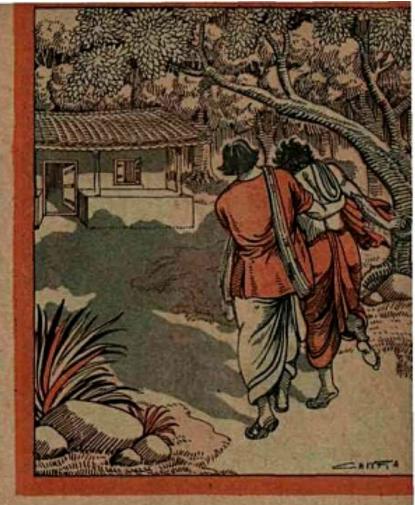
सोमलाल ने घर पहुँचकर, जो कुछ हुआ था अपनी पत्नी को बताया। जब तक पत्नी ने न पूछा, तब तक उसे याद न आया कि वह रामलाल के घर अपना लोटा छोड़ आया था।

ये सब बातें सुनकर पन्नालाल को बड़ा दुख हुआ। पिता का ऋण इतने दिन नहीं चुकाया गया था। पिता का ऋण चुकाना पुत्र का कर्तव्य है। जब तक वह पिता का ऋण नहीं चुका देता, तब तक पिता की आत्मा को शान्ति न मिलेगी।

पन्नालाल ने हिसाब लगाया। पिता का ऋण मय सूद के पाँच सौ रुपयों से अधिक होता था, इसलिए पन्नालाल ने तुरत कुछ जमीन बेची। रुपया हाथ में लेकर, गोरखपुर की राह खोजता निकल पड़ा। वह बड़ा गाँव था। जब वहाँ पन्नालाल ने एक आदमी से रामलाल के बारे में पूछा, तो उसने कहा—"रामलाल वही न, जो कभी गाँव के मुखिया थे, अब तो शायद वे नहीं हैं।"

पन्नालाल मुखिये का घर ढूँढ़ता निकला। उस समय चिरंजीलाल गाँव का मुखिया था, उसने पन्नालाल का नाम सुन रखा था। इसलिए उसने उसकी मान मर्यादा की और उससे पूछा कि वह किस काम पर आया था।

पन्नालाल ने अपने पिता के ऋण और रामलाल के बारे में बताकर कहा—"मैं

इस घटना के दो साल बाद सोमलाल की मृत्यु हो गई। पन्नालाल की माँ न जानती थी कि रामलाल का ऋण दे दिया गया था कि नहीं। सोमलाल घर न रहा करता था। हमेशा कहीं न कहीं घूमता रहता था। जब घर छोड़ कर जाता, तो दो तीन दिन तक घर आने का नाम न लेता। और जब वह अन्तिम बार बीमार पड़ा, तो सोमलाल की आवाज पक्षपात के कारण जाती रही। इसलिए वह अपनी पत्नी से कुछ भी न कह सका।

अभी तक नहीं जानता था कि मेरे पिता को आपके पिता को ११५ रुपये देने थे। पिछले तीस सालों से इसका जितना सूद होता था, उसका हिसाब लगाकर लाया हूँ। लीजिये।"

चिरंजीलाल ने लेने में आनाकानी की। "जाने दीजिये। आपके पिताजी को, जो मेरे पिताजी ने दिया था, उसे ऋण मत समझिये। आपके पिता की रक्षा करना ही बड़ी बात है। परन्तु आपका पुत्र कर्तव्य सचमुच प्रशंसनीय है।"

"नहीं माळूम आपके पिताजी ने क्या सोचकर सहायता की थी। पर मेरे पिताजी ने उसे ऋण ही समझा था। यह जानकर ही तो मैं यह रुपया लाया हूँ।" पन्नालाल ने कहा।

आखिर चिरंजीलाल ने पन्नालाल के बहुत मनाने पर, पैसा लेकर कहा— "खैर, जब आप इतना कह रहे हैं, तो मैं रुपया लिये लेता हूँ। मैं इसको किसी धार्मिक कार्य पर खर्च दूँगा।" उसने पैसे की रसीद दे दी। पन्नालाल ने चिरंजीलाल से विदा लेते हुए कहा— "हाँ, याद आया। मेरे पिताजी जाते समय आपके यहाँ अपना लोटा छोड़ गये थे, क्या वह है?"

चिरंजीलाल ने आश्चर्य में पूछा— "पुरानी चीजों को देखकर बताता हूँ। देख कर आता हूँ। जरा ठहरिये।" बहुत ढूँढ़ ढाँढ़कर वह एक छोटा-सा ताम्बे का लोटा लाया। "यह है, आपके पिताजी का लोटा।"

पन्नालाल उसे भक्तिपूर्वक स्वीकार करके अपने गाँव की ओर चल पड़ा। वह गाँव से चलकर कुछ दूर गया था कि उसे एक पेड़ के नीचे एक बूढ़ा सन्यासी बैठा दिखाई दिया। इस सन्यासी को पन्नालाल
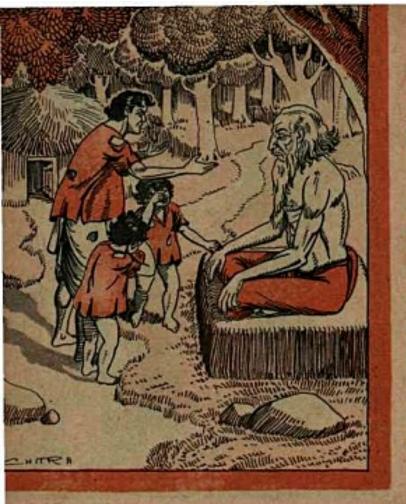
ने जाते समय भी देखा था। अब उस सन्यासी के सामने दो बच्चे और एक बड़ा आदमी, चीथड़े पहिने हुए खड़े थे। बड़ा आदमी रुंधी हुई आवाज में कह रहा था। "एक बार आकर माँ को देखो।" उसके साथ आये हुए छोटे बच्चे कह रहे थे। "बाबा घर आओ।" वे रो रहे थे और सन्यासी उनका रोना सुनता-सा न लगता था।

पन्नालाल वहाँ रुका। उनसे पूछताछ करके उसने सब कुछ मालूम कर लिया। यह बूढ़ा सन्यासी ही रामलाल था, जिसने तीस साल पहिले उसके पिता की रक्षा की थी। तीस साल पहिले इस गोरखपुर गाँव का, जो तब बहुत छोटा था, यह ही मुखिया और पटवारी था। उनका सचमुच गरीब कुटुम्ब था, मालगुजारी के सौ रुपये जो घर में रखे थे उन्हें चोर को देकर उसने सोमलाल के प्राणों की रक्षा की थी। परन्तु फिर वह रुपया वह न चुका सका। सोमलाल भी उनको वह रुपया न दे पाया।

ज्यों ज्यों मालगुजारी देने का समय पास आता जाता था त्यों त्यों रामलाल गाँव में सबसे ऋण माँगने लगा। चिरंजीलाल के पिता की रामलाल से न पटती थी। उसने रामलाल किस हालत में था, इसका अनुमान करके राजा के पास खबर पहुँचा दी। राजकर्मचारियों ने आकर तहकीकात की। रामलाल यह न कह पाया, उनको जो टैक्स उसको देना था, वह वह चोर को दे चुका था। कर्मचारियों ने उसको पद पर से हटा दिया। उसकी ज़मीन जब्त कर ली गई। उसे गाँव से निकाल दिया गया और चिरंजीलाल का पिता गाँव का मुखिया बन गया।

इस अपमान के बाद, रामलाल विरक्त-सा हो उठा। जंगल में आश्रम बनाकर, वह सन्यास लेकर रहने लगा। उसका लड़का ही कभी कभी उसको खाना दे जाता था। अब रामलाल की पत्नी बीमार थी। अब और तब की हालत थी। पति को एक बार देखने के लिए तड़प रही थी। इसलिए, लड़का, और पोते उसे घर ले जाने के लिए मना रहे थे।

यह सब सुन पन्नालाल चकित रह गया। "क्या मेरे पिता तुम्हारे घर कोई लोटा छोड़ गये थे?" उसने उनसे पूछा।

"जी हाँ, वह हमारे घर में है। जिस भलेमानस के कारण आज हमारी यह हालत हुई है क्या हम उसे कभी भूल सकते हैं? मेरी माँ ने कई बार उस लोटे को लेकर, उनके घर भिक्षा माँगने के लिए जाने को कहा है। मैंने उनसे कहा कि जब मेरे हाथ पैर गिर जायेंगे, तब उनके घर भीख माँगने के लिए जाऊँगा।" रामलाल के लड़के ने कहा।
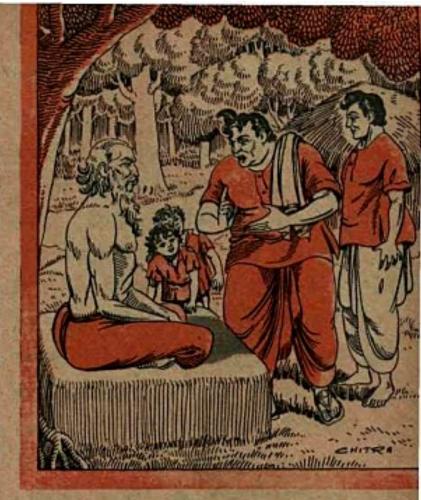
पन्नालाल ने अपनी सारी बात उनको सुनाई, उसने सन्यासी से कहा—"स्वामी आप सन्यासी रहना चाहें, या गृहस्थी, यह आपकी इच्छा है। परन्तु जब तक मैं आपके लड़के को फिर से गाँव का मुखिया नहीं बना देता, तब तक मेरे पिता की आत्मा को शान्ति न मिलेगी।"

वह, रामलाल के लड़के और उसके पोतों को लेकर उनकी झोंपड़ी के पास गया। रामलाल की पत्नी को पन्नालाल की बात सुनकर ऐसा लगा जैसे उसकी बीमारी आधी सुधर गई हो। अपने पिता का लोटा लेकर, रामलाल के लड़के को साथ लेकर वह चिरंजीलाल के घर गया। चिरंजीलाल पाँच दस आदमियों से बात

कर रहा था। पन्नालाल ने उसे देखकर कहा—"चिरंजीलाल अगर मैं गलती कर रहा हूँ तो क्या आपका यह फर्ज नहीं है, कि मुझे ठीक करें? रामलाल, आपके पिता नहीं हैं। मेरे पिता ने आपके पिता से ऋण नहीं लिया था, आपने जो लोटा दिया है, वह मेरे पिता का नहीं है। यह है, मेरे पिता जी का लोटा। इस पर मेरे पिता जी का नाम "सोमलाल" भी लिखा है, यह आदमी रामलाल का लड़का है। जो पैसा मैंने आपको दिया है वह इस आदमी को मिलना चाहिए। इसलिए मेरा रुपया मुझे वापिस कर दीजिये। यह रही आपकी दी हुई रसीद।"

चिरंजीलाल घबरा गया। "क्या बात है? क्या बात है? सब ने पूछा, चिरंजीलाल भी भला क्या कहता। बिना कुछ कहे, उसने पन्नालाल का रुपया उसे वापिस दे दिया। पन्नालाल ने वह रुपया लाकर रामलाल की पत्नी के पास जाकर रखा। "यह आपका रुपया है। आप अपनी बीमारी ठीक करवा लीजिये। जो कुछ खर्च करना है, आराम से खर्च कीजिये। मैं फिर मिलूँगा।" यह कहकर, वह राजा के कार्यालय में गया।

जब पन्नालाल ने रामलाल की कहानी राजकर्मचारियों को सुनाई, तो उन्होंने रिकार्ड की जाँच पड़ताल की और तीस वर्ष बाद गाँव की मुखियागिरी रामलाल के परिवार को दिलवाई। यह जानते ही कि रामलाल का लड़का फिर से गाँव का मुखिया होनेवाला था चिरंजीलाल ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और इस तरह वह गिरफतारी और सुनवाई से बच गया।

मनुष्य का यत्न
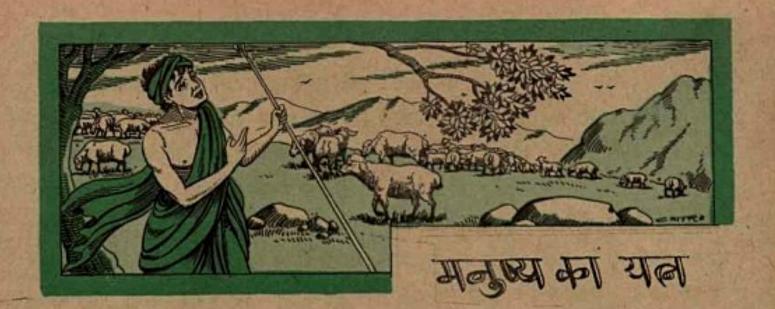
एक गाँव में एक गड़रिया रहा करता था, उसे एक दिन पेंठ जाना पड़ा। वह किसी से अपनी बकरियों की रखवाली के लिए भी न कह सका, क्योंकि उसकी जान पहिचान के, या रिश्तेदार कोई न थे। भगवान पर भरोसा करके, उसने उनको चरने छोड़ दिया और वह पेंठ के लिए निकल पड़ा।

गड़रिया जब कुछ दूर गया, तो पेंठ से एक जान पहिचान का आदमी लौटता दिखाई दिया। उसने पूछा—"क्यों भाई, कहाँ जा रहे हो?"

"जरा पेंठ जाना है। जरूरी काम है।" गड़रिये ने कहा।

"फिर तुम्हारी भेड़ बकरियों को कौन देख रहा है?" उस परिचित व्यक्ति ने पूछा।

"कौन है देखनेवाला, बस भगवान ही देख रहे हैं।" कहकर गड़रिया आगे चल दिया।

"मैं देख लूँगा कि भगवान कैसे देख रहे हैं!" यह सोचकर वह गड़रिये के भेड़ों के झुण्ड के पास गया। पचीस मोटे ताज़े भेड़ों को उसने चुन लिया और उन्हें अपने गाँव हाँक ले गया।

गड़रिया पेंठ में अपना काम देखकर, जब वापिस आया तो उसने पाया कि पचीस भेड़ों का कहीं पता न था। उसने काफी देर सोचकर निश्चय किया 'कि भेड़ों को चराने का काम भगवान के भरोसे छोड़ देना अच्छा नहीं है।

भेड़ों की देखभाल के लिए उसने दो कुत्ते खरीदे। जिसने उन कुत्तों को बेचा

हरिवंश

था, उसने रोज़ कुत्तों को दो दो पाव माँस देने के लिए कहा। इसलिए रोज़ गड़रिया अपने कुत्तों को दो दो चूहे खिलाया करता।

कुत्तों के रखने के बाद भी भेड़ें कम होती जाती थीं। उस ईलाके में भेड़िये अधिक थे। वे रोज़ दो एक भेड़ें उठा ले जाते। अगले दिन भेड़ों के गिनने पर ही यह मालूम होता। कुत्ते भेड़ियों को आते देखते, पर कुछ न करते, जब वे भेड़ों को उठा ले जाते, तो वे देखते खड़े रहते। भेड़िये, भेड़ों को मारकर कुछ माँस खा जाते और जो छोड़ जाते, उसे कुत्ते खाया करते।

रोज़ यही होता। भेड़ें रोज़ कम होती जाती थीं। गड़रिये को न सूझा कि क्या किया जाय। वह हताश हो गया। वह इसी फिक्र में रोने भी लगा।

इतने में उसे उस तरफ़ से एक दाढ़ीवाला बूढ़ा दिखाई दिया। उसने गड़रिये को रोता देख पूछा—"क्यों रोते हो? क्या आफत आ पड़ी है?"

"क्या करूँ अगर न रोऊँ? भगवान के भरोसे भेड़ों को छोड़ जब मैं एक दिन

पैठ गया, तो पच्चीस भेड़ें गायब हो गईं। फिर सोचा कि कुत्ते निगरानी के लिए रखे, तो नुक्सान न होगा। पर उनका होना और न होना बराबर है। हर रोज़ भेड़िये आते हैं और एक दो भेड़ों को ले जाते हैं। ये कम्बख्त कुत्ते भोंकते तक नहीं है।" गड़रिये ने कहा।

"कुत्तों को क्या खिला रहे हो?" बूढ़े ने पूछा।

"दो पाव माँस दे रहा हूँ, यानि दोनों को एक एक चूहा खिला रहा हूँ।" गड़रिये ने कहा।

"तभी तेरी यह हालत हुई है। जब कभी तुम भेड़ों को काटो तो उनका थोड़ा-सा माँस कुत्तों को भी खिलाओ। जब तुम अपना काम ठीक तरह करोगे, तो कुत्ते भी अपना काम ठीक करेंगे।" बूढ़े ने कहा।

तब से गड़रिया अपने कुत्तों का पेट भर खाना देने लगा। पहिले दिन एक भेड़ भी न गई। दूसरे दिन अन्धेरा होने के समय भेड़ियों के दो झुण्ड आये।

"जाओ, जाओ....हमारा मालिक हमें पेट भर खाना दे रहा है। हमें तुम्हारी झूटन नहीं चाहिए।" एक कुत्ता भोंका।

"जाओ मत। तुम आओ, अपना पेट भरो और हमें भी कुछ देते जाओ।" दूसरा कुत्ता भोंका।

भेड़ियों ने दोनों कुत्तों का विश्वास किया—क्योंकि कभी भी उन्होंने उलटकर बातें न की थीं। वे हिम्मत करके भेड़ों के झुण्ड में घुसे। तुरत दोनों निगरानी रखनेवाले कुत्तों ने उन पर हमला किया और उनको चीर फाड़कर मार दिया।

पातालनाग

सोना नदी के किनारे के गौड़ नगर का राजा था महीपाल। जब वह युवराजा ही था, तो वह अपनी पत्नी के साथ नदी के तट पर गया। वहाँ कुछ मछियारे मछली पकड़ रहे थे। उन्होंने एक टोकरी में तीन मछलियाँ लाकर राजा को भेंट दीं। उन्होंने कहा कि उन्हें वे राजमहल भिजवा देंगे। पर राजा ने कहा कि वह उन्हें स्वयं ले जायेगा।

फिर वह जब अपनी पत्नी के साथ पहाड़ की परिक्रमा करके नगर वापिस जा रहा था, तो पहाड़ की तलहटी में वह एक पत्थर पर बैठ गया और मछियारों की दी हुई मछलियों को ध्यान से देखने लगा। वे नदी में मिलनेवाली मछलियों से बड़ी थीं और बढ़िया भी। महीपाल की पत्नी ने मछलियों को ध्यान से देखते हुए कुछ आश्चर्य में पूछा—"यह कीड़ा क्या है?"

टोकरे में तीन मछलियों के सिवाय एक कीड़ा भी था। वह काला और भद्दा-सा था। तीन चार अंगुल लम्बा था। उसके आँखें तेज थीं। पूँछ मुड़ी हुई थी।

"छी, यह कोई शायद जहरीला कीड़ा है, फेंक दीजिये इसे।" महीपाल की पत्नी ने कहा।

महीपाल ने उस कीड़े को पूँछ से उठाया और पास के एक उजड़े कुँये में डाल दिया। फिर पति-पत्नी घर चले गये।

इसके कुछ दिनों बाद मगध और अंग राज्य के बीच में युद्ध हुआ। महीपाल अपने पिता के साथ मगध की ओर से युद्ध में गया। युद्ध में मगध की विजय

शान्तिस्वरूप

तो हुई पर महीपाल का पिता मारा गया। जब वह अपने नगर वापिस लौटा, तो कहीं कोई रौनक न थी। नगर के बाहर भूमि उजड़ी पड़ी हुई थी। गाँव जल गये थे।

महीपाल ने घर पहुँचते ही पूछा—"क्या इस प्रान्त में कोई आफ़त आई हुई है?"

"हाँ, आफ़त ही आई हुई है और वह भी आपकी बदौलत। आपने उस दिन जो कीड़ा उजड़े कुँयें में फेंका था, वह पाताल नाग था। छोटे कीड़े की तरह न मालूम कैसे मछियारों की टोकरी में आ गया? वह कुँयें में बड़ा हो गया और वह अब बीस हाथ लम्बा साँप है। जब उसे भूख लगती है, तो उसके मुख से लपटें निकलती हैं। वह भोजन के लिए जितनी जगह घूमता है, उतनी जगह पेड़ पौधे सब जल जाते हैं। आखिर पत्थर तक पिघल जाते हैं। वह पाताल नाग मनुष्यों और जन्तुओं को नहीं खा रहा है। यह गनीमत है। यह जानकर कि वह दूध पीता है अपने लोग चार बड़ी बड़ी कढ़ाइयों में दूध पहाड़ के नीचे रख आते हैं। वह हर रोज सवेरे आता है, दूध पीता है और नदी वापिस चला जाता है और नदी के बीच के पत्थर से लिपटकर सो जाता है। शायद पाताल वापिस जाने का मार्ग वह नहीं जानता है।" महीपाल की पत्नी ने कहा।
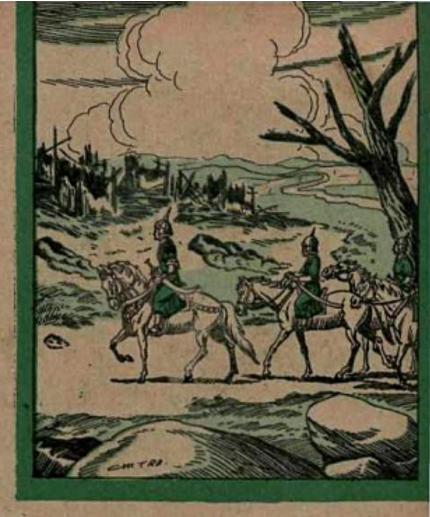
"कहते हैं पाताल नाग हजार वर्ष जीते हैं। अगर इस नाग को न मारा गया, तो खतरा है। इस नाग को चार चार कढ़ाइयों में भरकर दूध दे दिया गया, तो अपने लोग क्या पियेंगे? बच्चों को क्या देंगे?" महीपाल ने पूछा।

"लोग घबरा गये हैं। एक दिन वह भी आयेगा, जब नाग के लिए दूध नहीं बचेगा। उस दिन जब उसकी भूख नहीं मिटेगी, तो जहाँ चाहेगा वहाँ जायेगा और रास्ते में जो कुछ होगा उसको लपटों से जलाकर खाक कर देगा। इस नाग के मारे नाकों दम है।" महीपाल की पत्नी ने कहा।

"इसे जैसे भी हो, मैं मार दूँगा।" यह सोचकर वह नदी की ओर गया। पानी के बीच की शिला से वह साँप लिपटा हुआ था, उसका काला रंग चमक रहा था।

महीपाल ने देखा, पहाड़ के नीचे वह होज भी देखी जहाँ वह दूध पीता था।

अगले दिन सवेरे महीपाल अपनी तलवार लेकर उस जगह गया, जहाँ नाग दूध पीता था। वह एक सिर घुसाकर दूध पी रहा था और उसका बाकी शरीर बाहर था। यही मौका देख महीपाल ने अपनी तलवार से उसके दो टुकड़े कर दिये। उस चोट के कारण सिर का हिस्सा भी बाहर आ पड़ा। महीपाल ने सोचा कि नाग मर जायेगा। उसने उसके शरीर के कटे अंगों को छटपटाते देखा। छटपटाते छटपटाते वे सब यकायक मिल गये। नाग पहिले की तरह फिर हो गया और उसकी ओर मुड़कर लपटें उगलने लगा। महीपाल जोर से भागने लगा। कुछ दूर भागकर उसने पीछे मुड़कर देखा, तो नाग नदी की ओर जा रहा था।

महीपाल ने घर जाकर, जो कुछ हुआ था, उसे पत्नी को बताया।

"इस नाग को तलवार से मारना असम्भव है। यदि उसके सौ टुकड़े किये गये, तो सौ टुकड़े फिर जुड़ जाते हैं, इसे कैसे मारा जाये?" महीपाल ने कहा।

गौड़ नगर में एक वृद्ध था, जो बहुत बड़ा ज्ञानी समझा जाता था। बड़ी से बड़ी समस्या को सुलझाने का उपाय वह वृद्ध बताया करता था। महीपाल ने अपनी पत्नी की सलाह पर वृद्ध को बुलवाया। उसका उचित आदर सत्कार किया और उसे पाताल नाग की समस्या विस्तारपूर्वक बताई।

वृद्ध ने कुछ देर आँखें बन्दकर के सोचा—"राजा, यदि आप पाताल नाग को जीतना चाहते हैं, तो आपको उससे पानी में ही लड़ना होगा।" उसने कहा।

राजा को यह परामर्श बड़ा विचित्र-सा लगा। जिस नाग को जमीन पर ही न मारा जा सका, उसे पानी में भला कैसे मारा जा सकता है? यही नहीं नदी में बाढ़ आई हुई थी। उसकी धारा में खड़ा होना ही कठिन था। फिर नाग से युद्ध कैसे किया जाय?

इन प्रश्नों का वृद्ध ने कोई उत्तर नहीं दिया। "जो मुझे उचित लगा मैंने बता दिया, आगे आपकी इच्छा।" यह कहकर वृद्ध विदा लेकर चला गया।
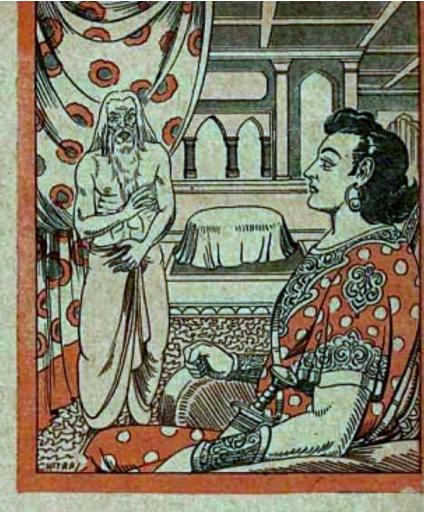
असम्भव ही सही, महीपाल ने वृद्ध के बताये हुए उपाय को बरतने की ठानी। जब नाग दूध पीने गया, तो वह नदी के पास गया, जहाँ वह दिन-भर लिपटा लिपटा पड़ा रहता था। वह पत्थर नदी के करीब करीब बीच में था। राजा नदी में उतरा, जैसे भी हो वह तैरकर उसके पास पहुँचा। उस पर तलवार हाथ में लेकर खड़ा हो गया। कुछ देर बाद नाग दूध पीकर स्वस्थान की ओर लौटा, उसने अपने पत्थर पर किसी को खड़े देखा। वह पानी में उतरकर तैरता पत्थर के पास पहुँचा।

और जल्दी जल्दी अपने को पत्थर के चारों ओर लपेटने लगा। महीपाल आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगा। चूँकि शिला के चारों ओर नाग का शरीर था, वह नहीं जान पा रहा था कि उसका सिर कहाँ था और पूँछ कहाँ थी। इतने में उसके पैर को किसी ने बाँध-सा दिया और उसे जोर से पानी में घसीटने लगा। वह साँप की पूँछ थी। महीपाल ने अपनी तलवार से उसको काट दिया। वह उसके पैर से फिसलकर नदी के प्रवाह में बहने लगा।

वृद्ध की सलाह की क्या खूबी थी, अब महीपाल को समझ में आने लगा। उसे नाग का भय जाता रहा। जहाँ जहाँ उसे नाग का शरीर दिखाई दिया, वहाँ वहाँ उसने नाग के टुकड़े टुकड़े कर दिये और जब जब एक टुकड़ा नदी में बहता गया, तब तब उसकी खुशी का ठिकाना न था। वे टुकड़े फिर न जुड़ सकते थे। जब महीपाल ने अपनी आँखों नाग के सिर को पानी में बहता देखा, तो वह तैरकर किनारे पर चला आया। फिर घर जाकर उसने उस वृद्ध का बहुत सम्मान किया, जिसने नगर को नाग के भय से बचा दिया था।

परन्तु एक बात राजा को नहीं पता लगी। वृद्ध ने पाताल नाग की भी बड़ी सहायता की थी। पाताल नागों की मृत्यु नहीं होती। राजा के काटे हुए नाग के टुकड़े समुद्र में जाकर एक हो गये। वहाँ के नागों ने इस नये नाग को पहिचान लिया। उसे अपना समझकर, वे उसे पाताल लोक ले गये।

कृष्ण की शरारतें बढ़ती गईं। गोपिकायें न सोच सकीं कि क्या किया जाये? कृष्ण को सम्भालना मुश्किल हो रहा था। वे चुप भी न रह सकती थीं। आखिर वे सब मिलकर यशोदा के पास गईं। एक ने शिकायत की। "आहा....लगता है, तुमने ही जैसे एक लाड़ले को जन्म दिया हो! उसके कारण हमें क्या क्या भुगतना पड़ रहा है जरा यह भी तो देखो। अगर छोटा समझकर हम छोड़ देती हैं, इसका मतलब यह तो नहीं है कि वह सिर पर चढ़ता जाये। तुम बड़े हो, तो बड़े होगे। सच कहा जाये, तो सारी गलती तेरी है। तुमने ही उसे हमें तंग करने के लिए भेजा है। लगता है, तुम्हारे दिल में कहीं दया के लिए जगह नहीं है। जरा कान पकड़कर सुनो, तुम्हारे लाड़ले ने क्या क्या किया है!" अभी वह कह ही रही थी कि दूसरी ने सामने आकर कहा।

"देखा, क्या किया इसने! हमारे घर में आ घुसा और दस घड़े घी, दही, दूध चट कर गया। "को" कहता सारे घड़े उल्टाता गया, हम गरीबों का क्या होगा! अगर ऐसा किया गया, हम कैसे जीयेंगे?"
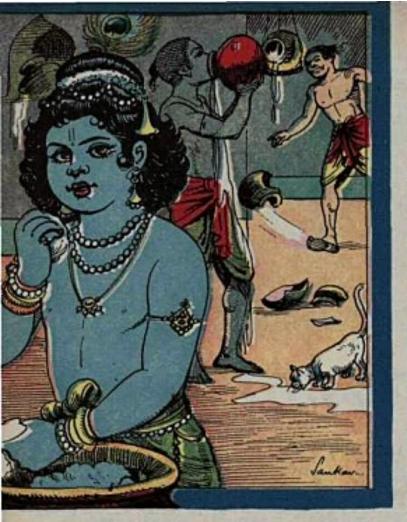
तब एक और गोपिका ने कहा—"अरे, तुम्हारा लड़का तो राक्षस है। मैंने घडों और छीकों में मक्खन रख रखा था, वह सब खा गया। घड़े तोड़ दिये। छीकें काट दिये। हम इससे भला कैसे निबटे, कहाँ जायें?"

एक और ने गुस्से में हाथ हिलाते, जोर जोर से यशोदा से कहा—"पिछवाड़े के कमरे में घी के घड़े रखे थे। किवाड़ पर ताले लगा रखे थे। न मालूम तुम्हारा लाड़ला कहाँ से आया, ताले तोड़ दिये और अन्दर जा घुसा। मैं डरकर भाग गई। न मालूम उसने घी खाया कि नहीं। या उसका क्या किया? जाकर देखती हूँ, तो एक बून्द घी भी नहीं है। इन कष्टों को झेलने से तो अच्छा यही है कि हम इस गाँव को छोड़ कहीं और जा बसे और आराम से रहे। कम से कम इस नटखट से तो पिंड छूटेगा।"

एक और पीछे से सबको धकेलती हुई आगे आई, "यह सब क्या सुन रही हो? हमारे घर में जो हुआ है जरा उसे भी तो जानो, तुम्हारा शरारती लड़का हमारे घर में घुसा। दस घड़े घी और दूध और दही के दस घड़े सारे घर में बिखेर दिये। खाली घड़ों को तोड़ ताड़ दिया। बर्तनों में रखे खाने की चीज़ों को बच्चों को खिला पिला दिया। बर्तन भी तोड़ ताड़ दिये। बछड़ों को गौवों के पास छोड़ छाड़ दिया। घर में रोते बिलखते बच्चों के लिए एक बून्द न घी है, न दूध है, न दही है। कुछ भी नहीं है। सब तेरा लड़का ही हड़प गया है।"

एक और ने रोते हुए कहा—"मैंने बच्चों के लिए और अपने पति के लिए घी

और मिश्री के पकवान बनाकर एक घड़े में रखे हुए थे। तेरा लड़का आया। घड़े उतारकर सब हजम कर गया। न मालूम उसके पेट में कौन-से भूत बैठे हैं। सच बताऊँगी तो क्या मेरा पति मेरा विश्वास करेगा!"

इस प्रकार सब ने एक एक से बढ़कर यशोदा से कृष्ण की शिकायत की। एक के घर वह गूँदा आटा और शकर खा गया। यही नहीं घड़े में रखे चावल भी खा गया। क्या ये छोटे बच्चों के काम हैं? किसी की गौ और बछड़े जंगल में हाँक दिये। उस समय घर में न उनका मालिक था, न लड़के ही। सब गन्दे शरारती काम हैं।

अन्त में सबने मिलकर कहा—"हम कहीं चली जायेंगी, तुम और तुम्हारा लड़का यहाँ आराम से रहना।"

सब की बातें सुनकर यशोदा ने हर किसी को समझाया। "जो कुछ नुक्सान तुम्हारा हुआ है, वह मैं पूरा कर दूँगी। फिक्र न करो, मगर तुम्हारे बगैर हम कैसे रह सकेंगे? न मालूम लड़के ने ये काम किये हैं कि नहीं। तुम कह रहे हो कि
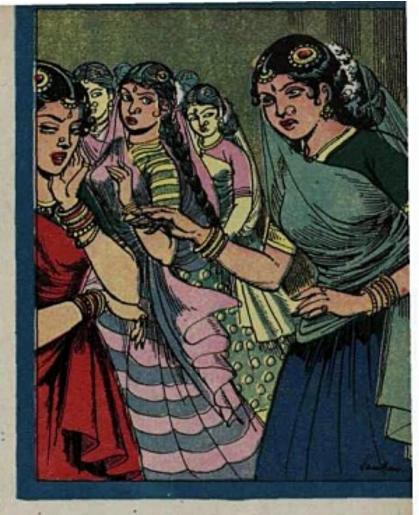
उसने किये हैं और तुम झूट भी क्यों बोलेगी? अब देखना मैं लड़के को कैसे काबू में रखती हूँ। तुम विश्वास करो। अब तुम अपने घर चली जाओ। वह फिर नहीं करेगा ऐसे काम।" यह कहकर उसने गोपिकाओं को भेज दिया।

फिर उसने कृष्ण को बुलाकर पूछा—"क्यों बेटा, क्यों इनके उनके घर जाते हो? क्या तुम्हें मक्खन और दूध की तंगी है? मैं जो कुछ देती हूँ, पीओ। क्या माँ का दिया हुआ थोड़ा-सा दूध दूसरों के ढ़ेर से दूध के बराबर नहीं है? क्यों अपने
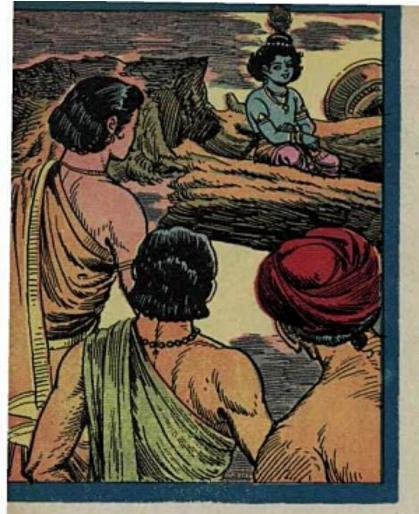
लोगों से यूँ झगड़ा करते हो!" कहकर उसने कृष्ण को दूध दिया। उसे दुलारा पुचकारा।

"सवेरे से बस, तेरी ही शिकायत सुन रही है। तुम बड़े शरारती हो गये हो। तुम दुष्ट हो और दुष्टों पर दया नहीं करनी चाहिए।" कहकर वह कृष्ण की बाँह पकड़कर गाड़ी के पास ले गई। बड़े ओखल से एक रस्सी बाँधकर उसके कमरे में उसने बाँध दी। फिर एक बेंत लेकर कहा—"अगर तुम यहाँ से हिले तो देखना क्या करती हूँ।" कहकर वह अपने घर के कामों में लग गई।

कुछ समय बीता। कृष्ण ने रस्सी को पकड़कर ओखल अपनी ओर घसीट लिया।

पशुओं के छप्पर के पास दो पेड़ थे। कृष्ण ओखल घसीटता घसीटता उन दोनों पेड़ के बीच में ले गया, फिर उसने ओखल यूँ ज़ोर से खींचा कि दोनों पेड़ फड़फड़ाते नीचे गिर गये।

कई गोप गोपियाँ भागी भागी आईं। क्या हुआ था, उन्होंने भी देखा। कुछ गोपिकाओं ने यशोदा के पास जाकर कहा—"तेरा लड़का भी क्या राक्षस है? उसे भी कहीं ओखल से बाँधा जाता है, वह बड़े बड़े पेड़ उखाड़कर अपने ऊपर डाल रहा है। सोच रही हो कि तुमने बड़ी अक़्लमन्दी का काम किया है? जाकर देखो कहीं लड़के पर आफ़त न आ पड़े।"

यह सुनते ही यशोदा का दिल धड़का। वह काँप उठी। वह तेज़ी से भागने लगी, न उसे चोटी की फ़िक्र थी, न आँचल की ही, ऊबड़ ताबड़ भागी।

इस बीच नन्द और गोप वहाँ आये। उखड़े हुए पेड़ों के बीच में कृष्ण को इस तरह बैठे हुए देखा, जैसे काले मेघों के बीच में चन्द्रमा मुस्करा रहा हो।

नन्द ने आकर, लड़के के कमर में बँधी रस्सी खोलकर, लड़के को उठाकर कहा—"अरे, इसकी कमर में अलग क्यों रस्सी बाँधी गई और क्यों उससे ओखल बाँधा गया और इसे खींचता यह इतनी दूर क्यों आया? इतने बड़े बड़े पेड़ों को इसने कैसे उखाड़ दिया? क्या है यह सब?"

यशोदा ने आकर बताया कि उसने ही कृष्ण को ओखल से बाँधा था। नन्द अपने लड़के की शक्ति देखकर मन ही मन बड़ा खुश हुआ और चकित थी।

बूढ़ी गोपिकाओं को यह कुछ समझ में न आया। कोई तूफान नहीं आया, बिजली न गिरी। कोई हाथी भी नहीं आया। सेना भी नहीं आयी। इस छोटे-से लड़के ने ही, इतने बड़े पेड़ उखाड़ दिये। इससे बड़ा उत्पात और क्या हो सकता है? यह क्या इसने पहिली बार किया है? वह राक्षसी पूतना यकायक मर गई थी। उतनी बड़ी गाड़ी टुकड़े टुकड़े हो गई थी।
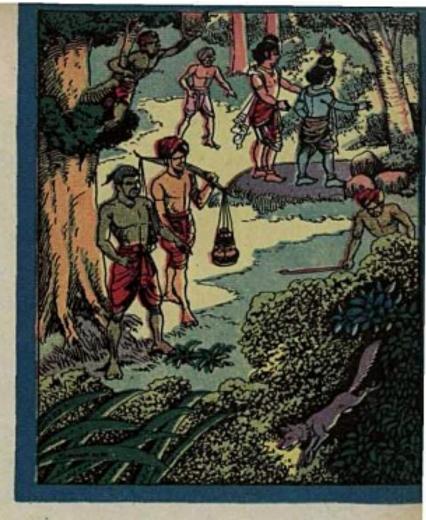
यहाँ रहना ही खतरनाक मालूम होता है। पर जहाँ पैदा हुए, बड़े हुए उस जगह को छोड़कर जायें भी तो कहाँ जायें? वे मन में यूँ सोचती सोचती अपने घर चली गईं।

दिन बीतते गये। बलराम आठ वर्ष का हो गया और कृष्ण सात का। वे साथ के लड़कों के साथ खेलते कूदते समय बिताने लगे। कभी यह खेल खेलते तो कभी वह। कभी चिल्लाते चिल्लाते भेड़ियों को भगाते। कभी मजे में गाने गाते। कभी पेड़ों पर चढ़ते। कहीं छत्ते दिखाई
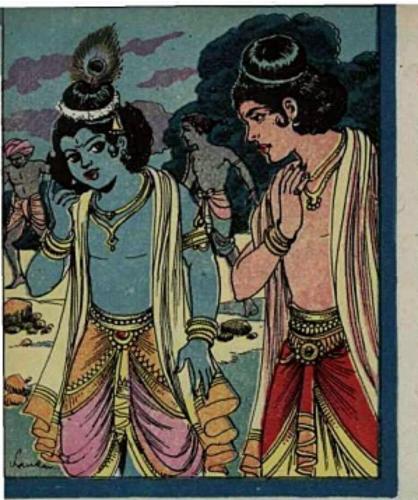
देते, तो उनको तोड़कर शहद पी जाते। इन यादव बच्चों का जीवन बड़े आनन्द में गुज़र रहा था।

एक दिन कृष्ण ने बलराम से कहा— "भाई, हम इस जंगल में पैदा हुए और यहीं इतने बड़े हुए। गोपों और गौ और भैंसों का एक जगह ही इतने दिन रहना क्या अच्छा है? घास खतम हो गई है। पेड़ गिर गिरा गये हैं। तालाब भी भर भरा गये हैं। ईन्धन के लिए बहुत दूर जाना पड़ रहा है। इसलिए चलो, हम यह जगह छोड़कर बृन्दावन चलें। कहते हैं, वह बहुत सुन्दर वन है। वहाँ गोवर्धनगिरि है। उस पर भान्डीर नाम का वट वृक्ष है। बृन्दावन के बीच में कालन्दी नदी बहती है। यहाँ से जाकर वहाँ हम सुख से रहेंगे। बूढ़े यह जगह नहीं छोड़ना चाहते। उनको डराने के लिए मैं एक उपाय करता हूँ। यह देखो।"

वह अभी कह ही रहा था कि उसके शरीर में से सैकड़ों, हजारों, भेड़ियों के झुण्ड निकले और वे आसपास के प्रदेश में भागने लगे। गोप और गौव्वें डर गईं, यह भेड़ियों का भयानक झुण्ड यकायक आ गया था। गोपों के लिए उनका शिकार करना भी सम्भव न था। उन्होंने एक ऐसे साँड़ को मार दिया था, जो शेर तक का सामना कर सकता था। गड़रियों के पलक मारते ही, कहीं से वे आये और बछड़े उठा ले गये। यही नहीं रात को शेरों और चीतों की चिंघाड़ भी सुनाई पड़ने लगी। बड़े बड़े सूअर आकर जहाँ तहाँ बड़े बड़े गढ़े खोदने लगे।

प्रमुख गोप एक जगह इकट्ठे हुए। जो तब तक उत्पात हुआ था, उससे वे भयभीत

अवश्य हुए थे। पर जैसे तैसे उन्होंने उसको सह लिया था। पर अब उन सब से बड़ी आफ़त आ पड़ी थी, अब क्या किया जाय?

"लोग कहते हैं कि बृन्दावन बड़ा सुन्दर है। पर वहाँ भी दुर्गम प्रदेश है और वहाँ भी राक्षस रहते हैं। कुछ भी हो। कुछ न कुछ करना होगा। यहाँ एक क्षण नहीं रहा जा सकता। लगातार कोई न कोई आफ़त आती ही जा रही है।" गोप प्रमुखों ने कहा।

वे जब यह सोच रहे थे, तो नारद उस तरफ़ आया और वह नन्द को बुलाकर कुछ दूर ले गया। "तुम सब बृन्दावन जाने की सोच रहे हो। पर तुम्हें डर है कि वहाँ राक्षस हैं और राक्षस तुम्हारे लड़के की हानि कर सकते हैं। यही न, सुनो। तुम अपने लड़के को केवल एक मनुष्य न समझो। वह आदिनारायण है, जिसने राक्षसों को मारने के लिए ही यह अवतार लिया है। बलराम में भी नारायणांश है। कृष्ण को मारने के लिए राक्षस कई रूपों में आये। गाड़ी में छुपकर उन्होंने उसे मारने की कोशिश की, फिर वे पेड़ों में आ छुपे। पर वे उसका कुछ न कर सके। यह सब तुमने अपनी आँखें देखा है। इसलिए बिना झिझके हिचके तुम सब बृन्दावन चले जाओ। शुभ होगा।" उसने कहा।

नारद कृष्ण से मिला। उससे भी यही बात कही। फिर नन्द ने और गोपों से कहा—"हम सब बृन्दावन जा रहे हैं। यह हमारा निश्चय है। यात्रा की तैयारी शुरू कर दो।"

अरण्य पुराण

[७]

बलदेव जंगल के जानवरों के बारे में अजीब अजीब बातें बताया करता। दूर बैठे, जब बच्चे उन्हें सुनते, तो अचरज करते।

बलदेव जब बन्दूक लेकर एक से बढ़कर एक कहानी सुनाता, तो मौवली का हँसी के कारण पेट फट-सा जाता। ताकि कोई यह देख न लें कि वह हँस रहा था, वह अपने मुँह पर हाथ रख लेता।

बलदेव ने बताया कि मेगुआ के लड़के को एक भूत बाघ उठा ले गया था। कुछ दिन पहिले एक सूद का व्यापार करनेवाला व्यापारी मर गया था और वह दुष्ट भूत बनकर बाघ में घुस गया था।

"इसमें कोई झूट नहीं है। जब उस पुरन्दास की बहियाँ जलायी गईं, तब एक दंगा-सा हो गया था। उस दंगे में उसका एक पैर भी टूट गया था। जिस बाघ के बारे में मैं कह रहा हूँ, वह भी लंगड़ा है क्योंकि उसके पैरों के निशान सब जगह एक से नहीं हैं।" बलदेव ने कहा।

"तुम्हारी बातें क्या इसी तरह की उल्टी सीधी होती हैं? वह बाघ पैदा ही लंगड़ा हुआ था, यह बात सब जानते हैं। जिन लोगों में लोमड़ी जितनी भी हिम्मत नहीं है, ऐसा व्यापारी भला कैसे भूत बनकर जानवरों में घुसेगा?" मौवली ने पूछा।

आश्चर्य के कारण बलदेव के मुख से बात न निकली। गाँव के मुखिया ने पूछा—"कौन है वह? अरे जंगली है क्या? अगर इतना जानते हो तो उसका
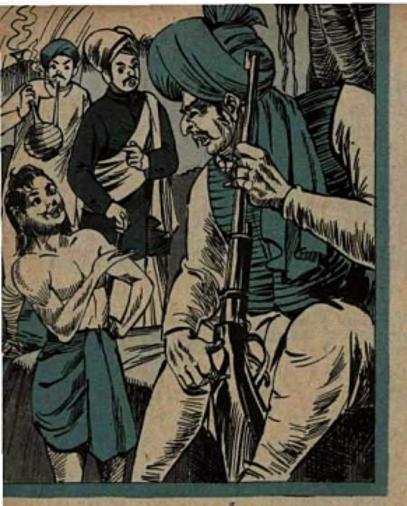
चमड़ा ले आओ। सरकार ने ऐलान किया है कि जो कोई उसे पकड़ लायेगा, उसे सौ रुपये ईनाम दिया जायेगा। कुछ भी हो, अच्छा है कि तुम बड़ों की बातों में यूँ दखल न दिया करो।

मौवली ने उठकर कहा--"मैं तुम्हें इतनी देर से सुन रहा हूँ। बलदेव ने सिवाय एक दो बातों के पास के जंगल के बारे में एक बात भी तो ठीक नहीं बताई, फिर भी कैसे उन भूतों और पिशाचों की खबरों पर, जिनको उसने देखा नहीं है विश्वास किया जाय?" कहता वह चला गया।

बलदेव को यह सुन बड़ा बुरा लगा।

"इस लड़के को जल्द से जल्द गौवें चराने के लिए भेज देना अच्छा है।" गाँव के मुखिया ने कहा।

गाँव के लड़के सवेरे सवेरे पशुओं को चराने ले जाते और शाम को वापिस आते। जब तक बच्चे पशुओं के साथ रहते, उनको कोई खतरा न था। क्योंकि शेर भी पशुओं के झुण्ड के पास आने का साहस नहीं कर सकता। अगर बच्चे फूल तोड़ने के लिए या कुछ और करने उनसे दूर चले जाते, तो उनको जंगल के जन्तुओं से खतरा सम्भव था।

सवेरा होते ही, मौवली "राम" नाम के भैंसे पर सवार होकर निकल पड़ा। भैंसें एक एक करके उसके पीछे चलने लगी। मौवली साथ के लड़कों पर चलाया करता। उनको पशुओं को छोड़कर जाने से रोकता।

जहाँ पशु चरते थे वहाँ टीले और पत्थर आदि थे, ज़मीन ऊबड़ खाबड़ थी। पशु नीची जगह पर दिखाई न देते थे। जैसे भी हो दलदल ढूंढने चले जाते।

मौवली अपने झुण्ड को जंगल के पास ले जाता। वैनगंगा के तट तक ले गया। "राम" पर से उतर कर, वह वहाँ की झाड़ियों में घुसा। वहाँ उस के लिए "भाई" इन्तज़ार कर रहा था।

"तुम्हारे लिए कितने दिनों से इन्तज़ार कर रहा हूँ। पशुओं को चराने का यह काम क्या कर रहे हो?" उसने मौवली से पूछा।

"ऐसा ही कहा गया है। कुछ दिन मुझे पशु चराने होंगे। शेरखान क्या कर रहा है?" मौवली ने पूछा।

"वह फिर इस ईलाके में आया। उसने तुम्हें खूब खोजा। जब उसे कहीं कोई शिकार न मिला, तो वह कहीं चला गया। वह तुम्हें मारने की ताक में ही है।" भाई ने कहा।

"खैर, शेरखान जब तक वापिस नहीं आता तब तक तुम या और कोई भाई जब मैं पशु चराने इस तरफ़ आऊँ तो यहाँ टीले पर बैठे दिखाई देना। वह जब वापिस आ जाय, तो मैदान के लाल कीकर के पास तुम मुझे दिखाई देना। उसके बारे में जानना मेरे लिए ज़रूरी है।" मौवली ने कहा।
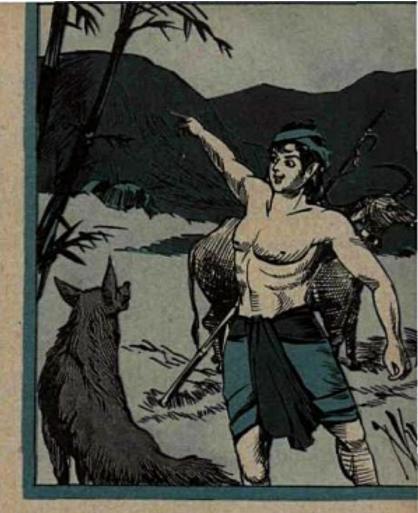
भाई को भेज देने के बाद, वह पेड़ की साया में सो गया। चारों ओर गौ भैंसें चर रहीं थीं।

पशुओं के चराने से अधिक फ़ुरसतवाला काम शायद कोई और न हो। गौ चरानेवालों को दिन भर और कोई काम नहीं होता। पशु चरते, चरते सारा दिन गुज़ार देते हैं। वे चिल्लाते भी नहीं हैं। भैंसें, जब तक चरना होता है, तब तक चरती हैं, फिर किसी पोखर में जाकर दल दल में आराम करती हैं। चरानेवालों को कभी कभी आकाश में गिद्ध की सीटी-सी

आवाज़ सुनाई पड़ती है। उसकी सीटी सुनकर और गिद्ध भी मंडराने लगते हैं। वे किसी मरे पशु पर आ टूटते हैं, और उसका माँस नोंच नोंचकर खाने लगते हैं।

बच्चे थोड़ी देर तो सोते हैं फिर खेलते कूदते हैं, नहीं तो जंगल के फूल जमा करके मालायें बनाते हैं। नहीं तो मिट्टी से घरोंदें बनाते हैं। फिर कभी राजा बनते हैं, तो कभी रानी, तो कभी देवी देवता। इस तरह वे समय काट देते हैं। अन्धेरा होते ही वे पशुओं को आवाज़ देते हैं। वे अपनी अपनी जगह से उठकर आते हैं और लड़कों के साथ गाँव की ओर चले जाते हैं।

मौवली हर रोज़ जब अपने पशु लाता तो टीले की ओर देखता। उसके भाइयों में से कोई एक वहां पर दिखाई देता। इसका मतलब यह था, कि शेरखान वापिस नहीं आया था। वह रोज़ पेड़ के नीचे सो जाता और अपने जंगली जीवन के सपने देखा करता। शेरखान अगर आ जाता और वह कहीं जंगल में लड़खड़ा रहा होता, तो मौवली को अवश्य मालूम हो जाता।

आखिर टीले पर मौवली को एक दिन उसका कोई "भाई" न दिखाई दिया। मौवली मन ही मन हँसा और वह उस दिन अपने पशुओं को लाल कीकर की ओर ले गया। वहाँ उसका "बड़ा भाई" इन्तज़ार कर रहा था। उसके रोंगटे खड़े थे।

उसने हाँफते हुए कहा—"शेरखान वापिस आ गया है।"

(अभी है)

६१. समर्रा मीनार

शिया मुसलमानों के लिए समर्रा एक तीर्थ स्थल है। यह टीग्रस नदी के पास है। अब्बास वंश के खलीफाओं ने नवीं सदी में यहाँ राजधानी बनाई। नवें खलीफे द्वारा बनाये गये इस मीनार ही ऊँचाई १७० फीट है। यह ईंटों से बनायी गयी है।

Photo by T. S. Satyan
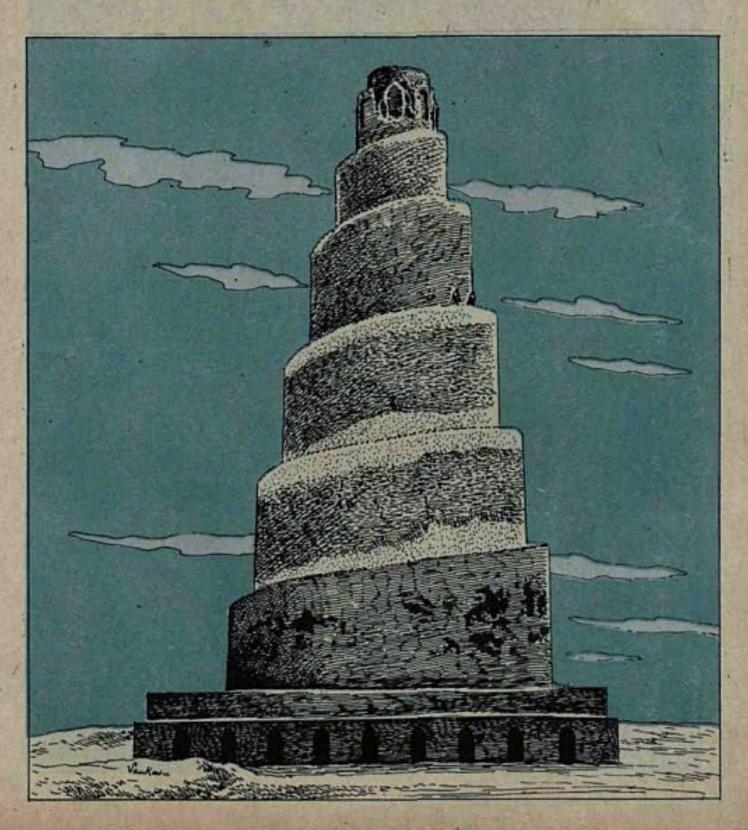
पुरस्कृत परिचयोक्ति

है कहती पायल की झनकार!

प्रेषक: बसंत जयस्वाल - नागपुर

Photo by Madan Gopal

पुरस्कृत
परिचयोक्ति
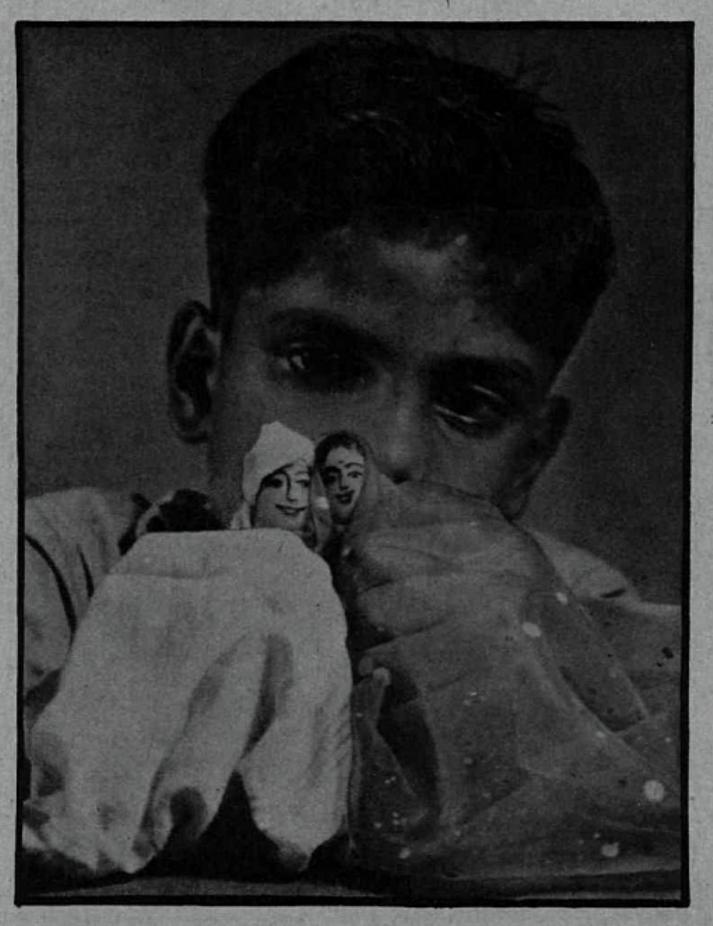
सुख सम्पन्न हो तेरा संसार !!

प्रेरक :
बसंत जयस्वाल - नागपुर

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

मार्च १९६७ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें !

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ जनवरी १९६७ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

जनवरी – प्रतियोगिता – फल

जनवरी के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनके प्रेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **है कहती पायल की झनकार !**
दूसरा फ़ोटो : **सुख सम्पन्न हो तेरा संसार !!**

प्रेषक : **वसन्त ज. जयस्वाल,**
चितारओल, नागपूर - २

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

YET WE DON'T SAY
WE ARE THE BEST

ONLY
WE DO OUR BEST

PRASAD PROCESS PRIVATE LTD
CHANDAMAMA BUILDINGS MADRAS-26